(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 51, अंक 2, अगस्त, 2015,
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी
आठवीं पुण्यतिथि (25 अगस्त, 2015)

1

2

3

4

5

6

7

8

1.दिल्ली (सिरी फोर्ट)- 'सहज राजयोग से स्वस्थ एवं सुखी समाज' विषयक राष्ट्रीय अभियान का शुभारंभ करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, संयुक्त राष्ट्र संघ सूचना केन्द्र की निदेशिका बहन किरण मेहरा, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.चक्रधारी बहन तथा अन्य। **2.ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)**- न्यायविद् एवं अधिवक्ता प्रभाग द्वारा आयोजित अखिल भारतीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु.रमेश शाह, पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता आर.पी.नागरथ, पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायमूर्ति भ्राता प्रीतम पाल, ब्र.कु.बी.एल.माहेश्वरी, ब्र.कु.पुष्पा बहन, ब्र.कु.लता बहन तथा अन्य। **3.ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)**- प्रशासक प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, हरियाणा स्वास्थ्य एवं आयुर्वेद, यातायात, पर्यटन मंत्री भ्राता करणदेव कम्बोज, ब्र.कु.आशा बहन, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.अवधेश बहन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अतिरिक्त महानिदेशक भ्राता पी.वी.के.रेड्डी, केन्द्रीय कॉमर्स एवं इंडस्ट्री के अतिरिक्त सचिव भ्राता जे.के.दादू तथा अन्य। **4.ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)**- महिला सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजस्थान की महिला तथा बाल विकास राज्यमंत्री बहन अनीता भदेल, हरियाणा पुलिस महानिरीक्षिका बहन सुमन मंजरी, मुंबई मेयर बहन स्नेह अंबेकर, ब्र.कु.चक्रधारी बहन, ब्र.कु.शारदा बहन, ब्र.कु.डॉ.सविता बहन तथा अन्य। **5.आबू पर्वत**- अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, एस.डी.एम. भ्राता अखिल चतुर्वेदी जी, ब्र.कु.अमीरचंद भाई, ब्र.कु.शीलू बहन, ब्र.कु.शशि बहन, डॉ.प्रताप मिड्ढा एवं अन्य। **6.रायपुर**- अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में राजयोग का परिचय देते हुए ब्र.कु.रश्मि बहन। मंचासीन हैं ब्र.कु.कमला बहन, छ.ग. के गृहमंत्री भ्राता रामसेवक पैकरा, खाद्यमंत्री भ्राता पुन्नू लाल मोहले, कृषि एवं जल संसाधन मंत्री भ्राता बृजमोहन अग्रवाल, विधानसभा अध्यक्ष भ्राता गौरीशंकर अग्रवाल, राजस्व मंत्री भ्राता प्रेमप्रकाश पाण्डे, उद्योग मंत्री भ्राता अमर अग्रवाल तथा विधानसभा के प्रमुख सचिव भ्राता देवेन्द्र वर्मा। **7.ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)**- समाज सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, पूर्व सांसद भ्राता विजय इंद्र, कर्नाटक कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ.बी.डी.पाटिल, ब्र.कु.अमीरचंद भाई, ब्र.कु.प्रेम भाई तथा अन्य। **8.कोलकाता**- आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए प्रथम महिला पुलिस अधिकारी डॉ.किरण बेदी, नृत्यांगना बहन अलकनंदा रॉय, फैशन डिजाइनर बहन अनुमिता पॉल, एफ.आई.सी.सी.आई.की अध्यक्ष बहन मंजुला जैन तथा ब्र.कु.कानन बहन।

संजय की कलम से

परमात्मा नर-नारी को कौन-सा रक्षा-बंधन बाँधते हैं

हर वर्ष की तरह इस बार भी रक्षा-बन्धन का त्योहार भारत में बहुत ही धूमधाम से मनाया जायेगा। घर-घर में बहनें, भाइयों की कलाई पर सुन्दर डोरे बाँधेंगी। बहनें और भाई इस दिन एक-दूसरे का मुख मीठा करेंगे और यदि बहन, भाई से अलग किसी दूसरे शहर में रहती होगी तो भी अपने भाई के पास रक्षा-बन्धन भेजकर अपने पवित्र स्नेह को प्रगट करेगी। सचमुच यह त्योहार भारत के अन्य त्योहारों से कुछ न्यारा ही है। इसमें पवित्रता और स्नेह की झलक अधिक है।

रक्षा-बन्धन क्या है?

कहते हैं कि बहनें अपने भाइयों को यह बन्धन इसलिए बाँधती हैं कि वे दुख के समय बहनों की सहायता करें। लोग कई ऐसे ऐतिहासिक वृत्तान्तों का भी उदाहरण देते हैं कि अमुक महिला ने अमुक व्यक्ति को रक्षा-बन्धन भेजा या बाँधा था और उस व्यक्ति ने आपदा के समय उस महिला को बहन मानकर उसकी रक्षा की थी। इसके अतिरिक्त, हम यह भी देखते हैं कि रक्षा-बन्धन के दिन ब्राह्मण लोग भी अपने यजमानों को रक्षा-बन्धन बाँधते हैं। अत: प्रश्न यह उठता है कि इस त्योहार की शुरूआत कैसे हुई होगी? आज रक्षा-बन्धन की जो रीति है, वह तो मनुष्यकृत है, लौकिक है। मनुष्य-सृष्टि के नव-निर्माता अथवा इसकी आदि-मर्यादा के स्थापक तो प्रजापिता ब्रह्मा ही माने गये हैं। तो प्रश्न है कि प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा परमपिता परमात्मा शिव ने नर-नारी को कौन-सा रक्षा-बन्धन बाँधा था?

परमात्मा ने आत्मा को वचन-बद्ध किया था

परमात्मा धर्मग्लानि अथवा पवित्रता-संकट (Moral crisis) के समय अवतरित होकर नर और नारी दोनों को पवित्रता-बन्धन बाँधते हैं। वे आत्मा को बन्धन बाँधते हैं अर्थात् उसे वचन-बद्ध करते हैं कि वह काम, क्रोध, लोभ, मोह,

अमृत सूची

- इच्छाओं पर नियंत्रण रखें *(सम्पादकीय)* 5
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के .7
- 'पत्र' संपादक के नाम 9
- ज्ञानामृत की बात *(कविता)* 9
- हर एक दादी को अपना.....10
- ईश्वरीय कारोबार में.....11
- गुणमूर्त दादी जी.....14
- दादी *(कविता)* 17
- शान्तिदूत बन आई *(कविता)* .17
- दुर्व्यसनों से दूर हुआ 18
- आध्यात्मिकता और भ्रान्तियाँ.19
- सर्जनों का सर्जन बाबा 22
- रंक से राव बनाया बाबा ने ...23
- शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा....24
- बेटी बचाइये*(कविता)* 26
- सचित्र सेवा समाचार 27
- रूहानी दुनिया का साक्षात्कार 28
- बाबा ने बचाई.....29
- सचित्र सेवा समाचार 30
- अनुभवों का सागर.....32
- ज़िदगी का सच 33
- दादी ने बढ़ाया हौसला 34
- ओ प्रकाश स्तंभ *(कविता)* ...34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

अहंकार रूपी माया से अपनी रक्षा करेगी। आत्मा तो सूक्ष्म ज्योति-बिन्दु है। अत: उसे तो यह स्थूल रक्षा-बन्धन बाँधा नहीं जा सकता। शरीर में आत्मा का स्थान भ्रकुटि के बीच में है, वहाँ भी रक्षा-बन्धन बाँधना न केवल कठिन है बल्कि उपहासजनक भी है। रक्षा के लिए शरीर में तो भुजा ही प्रतीक है। अत: परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा जो रक्षा-बन्धन बाँधने की सम्मति देते हैं, वह नर-नारियों की कलाई पर ही बाँधा जाता है। यह स्थूल रक्षा-बन्धन तो प्रतीक मात्र होता है। इसे जो नर-नारी बाँधना स्वीकार करते हैं वे पवित्रता की रक्षा करने के लिए वचन-बद्ध हो जाते हैं। वे काम, क्रोधादि विकारों का वार अपने मन, वचन और कर्म पर न होने देने का पावन व्रत लेते हैं। वे अशुद्ध आहार, व्यवहार, विचार आदि से स्वयं की रक्षा करते हैं।

अक्षत पर केसर लगाने का अर्थ

कलाई पर रक्षा-बन्धन बाँधने के साथ-साथ माथे पर भी अक्षत (चावल)-केसर का या चन्दन का तिलक लगाया जाता है क्योंकि माथे पर तिलक का जो स्थान है वह आत्मा का स्थान है। 'अक्षत' का अर्थ 'चावल' भी है और 'अविनाशी' भी है। अत: अक्षत (चावल) पर केसर लगाना आत्मा को ज्ञान रंग में रंगने का बोधक है। रंगे हुए अक्षत को भ्रकुटि के बीच लगाने का भाव यह है कि आत्मा को ज्ञान मिलने पर ही आत्मा अपनी पवित्रता की रक्षा कर सकेगी।

भारत को स्वर्ग बनाने वाला रक्षा-बन्धन

इस प्रकार ज्ञानयुक्त रक्षा-बन्धन जो आत्मा बाँधती है, उसके सहायक परमात्मा स्वयं हैं। परमात्मा यह अलौकिक रक्षा-बन्धन बाँध कर भारत को पतित से पावन बनाते हैं और पवित्रता के फलस्वरूप भारत देश नरक से स्वर्ग बन जाता है। अत: यह बन्धन माया के काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष आदि बन्धनों से छुड़ाने वाला है। यह बन्धन नहीं है, वास्तव में यह ज्ञान और योग

की कैंची है जो कि रावण रूपी बहेलिये अथवा शिकारी के जाल के पाशों को काट कर आत्माओं रूपी पक्षियों को मुक्त कराने का साधन है। यह ईश्वरीय रक्षा-बन्धन बाँधने के बाद फिर किसी प्रकार का रक्षा-बन्धन बाँधने की आवश्यकता नहीं रहती क्योंकि इस द्वारा भारत स्वर्ग बन जाता है। परमपिता परमात्मा शिव ने चारित्रिक संकट की आज की परिस्थिति में सभी नर-नारियों के लिए यह पवित्रता का रक्षा-बन्धन अमृत-तुल्य अथवा संजीवनी बूटी रूप बताया है। इसमें मनुष्यात्मा का अपना तथा संसार का भी कल्याण निहित है। ऐसा माहात्म्य है रक्षा-बन्धन का!

क्या ही अच्छा हो यदि आज भारत सरकार रक्षा-बन्धन को पवित्रता-बन्धन स्वीकार कर इसे एक राष्ट्रीय त्योहार के रूप में मनाये। यह त्योहार केवल हिन्दू ही नहीं बल्कि सभी धर्मों के लोग पवित्रता, सेलीबेसी (Celibacy) या ब्रह्मचर्य की रक्षार्थ मनाएँ, जन-गण को ब्रह्मचर्य का महत्व-दर्शन कराया जाये, उन्हें पूर्व काल की पावन सृष्टि (सतयुगी), देव-सृष्टि अथवा पैराडाइज (Paradise) का बोध कराया जाये। इस युक्ति से भारत की न केवल जनसंख्या में अति वृद्धि की समस्या का हल होगा और न केवल आर्थिक संकट टलेगा बल्कि देशवासियों का चरित्र बहुत ऊँचा उठेगा, उनका मन सात्विक होगा, वृत्ति और दृष्टि शुद्ध होगी। ❖

इच्छाओं पर नियंत्रण रखें

मानव जीवन बड़े विरोधाभासों से भरा है। इसे खतरे भी बहुत हैं इसलिए कदम-कदम पर सावधानी की आवश्यकता भी है। सबसे ज्यादा खतरा इसे उनसे है जिसके सहारे यह चल रहा है। देखिए, आग नहीं तो जीवन नहीं, परन्तु इसी आग से कितना खतरा है। हम अनेक नियन्त्रणों में रखकर आग का प्रयोग करते हैं। चाहे चूल्हे की आग हो, दीप की आग हो, अंगीठी की आग हो या फिर बिजली के रूप में या अन्य किसी रूप में हो, हम उसे मर्यादाओं में बांधकर रखते हैं। ज़रा भी मर्यादा से बाहर निकले, हमारे लिए खतरा बन जाती है।

हवा और पानी से बचाव

पानी और हवा के साथ भी ऐसा ही है। इनके बिना जीना मुमकिन नहीं। फिर भी देखिए, पानी पर कितना नियन्त्रण है। जितना चाहिए उतना लेकर बाकी को सागर, तालाब, नदी, टैंक आदि के रूप में बाँधकर रखते हैं, बिना नियन्त्रण के यह कब जानलेवा बन जाए, कुछ कह नहीं सकते। हवा भी आंधी-तूफान का रूप धारण कर सब कुछ तहस-नहस कर देती है। यूँ तो हवा के बिना पल भर में दम घुटना शुरू हो जाता है पर हम तूफानों से तो बचकर ही रहना चाहते हैं। सुहावनी हवा का आनन्द लेते-लेते जब उसे आंधी में परिवर्तित होते देखते हैं तो सिर-मुख ढककर उससे बचने का पुरुषार्थ करते हैं।

इच्छाओं पर भी चाहिए नियन्त्रण

इच्छाओं के सम्बन्ध में भी यही फार्मूला है। लोग कहते हैं, इच्छा नहीं होगी तो विकास कैसे होगा, इच्छा के बिना मानव आगे कैसे बढ़ेगा? वास्तव में विकास आवश्यकता के कारण होता है, इच्छा के कारण नहीं। इसलिए कहा जाता है, आवश्यकता आविष्कार की जननी है। यह नहीं कहा जाता, इच्छा आविष्कार की जननी है। फिर भी यदि हम इच्छाओं को महत्व देते हैं तो उन्हें भी आग, पानी और हवा की तरह नियन्त्रण में रखना आवश्यक है। आग ज़रूरी है पर हम उसे खुली छूट नहीं दे देते कि यह कहीं भी भड़के, कैसे भी भड़के। पानी ज़रूरी है पर यूँ ही बिना ज़रूरत के न तो पीते हैं और न ही बहने देते हैं। इसी प्रकार इच्छाओं पर भी तो नियन्त्रण चाहिए। यदि उन पर अंकुश नहीं, उनकी सीमा निर्धारित नहीं, उन्हें दिशा नहीं दी गई तो ये भी विनाशकारी सिद्ध होंगी। अनियंत्रित इन्द्रिय इच्छाओं के कारण आज समाज में कितना दुख, अशान्ति, अपराध, हिंसा और विकार हैं। इच्छाओं की पूर्ति होते न देख हताश, निराश रहते हैं। इच्छा पूर्ति में बाधक को शत्रु समझते हैं, उसका काम तमाम करना चाहते हैं पर यह नहीं समझते कि यह इच्छा ही शत्रु है। इसी का काम तमाम करना चाहिए।

आसक्ति बना देती है शक्तिहीन

जीवन जीने का सही तरीका यह है कि चीज़ों और साधनों का प्रयोग करें और मनुष्यों को प्यार करें पर आज यह तरीका उलट गया है। आज हम मनुष्यों का प्रयोग करते हैं, उनके साथ 'यूज एण्ड थ्रो (प्रयोग करो और फेंको)' की वृत्ति अपनाते हैं। अपने से छोटे – आयु में या पद में, बुद्धि में या शारीरिक बल में – हम उनसे खूब काम ले लेते हैं पर जब वे किसी भी रूप में अपना हक मांगते हैं तो हमें बुरा लगता है। हम उनसे दूर होने की, कन्नी काटने की या दूर करने की कोशिश करते हैं। मान लीजिए, छोटा भाई है, दुकान पर खूब काम करता है पर जब हक या हिस्सा मांगता है तो दुश्मन लगने लगता है, आँख में किरकने लगता है। यदि व्यक्ति काम ना कर सके, बीमार या बूढ़ा हो जाए तो हम जल्दी से जल्दी पीछा छुड़ाने की कोशिश करते हैं पर

टूटी-फूटी बेकार चीज़ों को तो बड़ा सम्भाल कर रखते हैं। टूटे जूते, जंक लगा लोहा, टाट – न जाने क्या-क्या हमारे स्टोर में बरसों तक भरे रहते हैं इसलिए कि हम सोचते हैं, पता नहीं चीज़ कब काम आ जाए। विचारणीय बात है कि मानव की दुआएँ और आशीर्वाद भी तो रोज़ काम आएंगे, उन्हें भी सम्भाल लीजिए। चीज़ों को कई-कई बार, निकाल-निकाल कर देखेंगे, पोछेंगे, दिखाएँगे, उनकी सेटिंग बदल-बदल कर देखते रहेंगे, सहलाएंगे। चीजों से ज्यादा प्यार है तब तो यह सब होता है। चीज़ों की आसक्ति ने हमें इतना शक्तिहीन कर दिया कि हम अपनों के साथ भी अपनापन नहीं रख पाते।

इच्छाएँ हैं सीमा रहित

धरती, आसमान, सागर – सबकी सीमाएँ हैं पर इच्छाओं की कोई सीमा नहीं। आज यदि वे एक मीटर लम्बी हैं तो कल सौ, फिर हज़ार मीटर, लाख मीटर और बढ़ते-बढ़ते कब सारी दुनिया भी उनके आगे छोटी पड़ जाए, कह नहीं सकते। अत: इच्छाओं रूपी बेलगाम घोड़े पर बैठकर अपने मन को लहूलुहान न करें। जब कोई धन-वैभव से चिपका रहता है तो दूसरों में भी चिपकने के वायब्रेशन पैदा कर देता है। पर जब कोई आन्तरिक अनासक्ति के साथ जीवन-यापन करता है तो दूसरे में भी ऐसे ही बीज बो सकता है। वाणी से पहले कई गुणा शक्ति के साथ वायब्रेशन काम करते हैं अत: हम वाणी से अनासक्ति के और इच्छा मात्रम् अविद्या के भाषण देने की बजाय अपने कर्मों से इनके वायब्रेशन फैलाएँ। वाणी असरदार तब होती है जब कर्म उस अनुसार किए गए हों, नहीं तो भीतर का खालीपन वाणी को भी खालीपन से भर देता है। वह ठोस असर नहीं करती। जैसे कांपते हाथों से तीर नहीं चलाया जा सकता, चला भी दिया जाए तो निशाने पर नहीं लगता, इसी प्रकार भीतर श्रेष्ठ कर्महीनता की हलचल हो तो होंठ भी काँप जाते हैं। काँपते होंठों से हृदय में उतर जाने वाले शब्द कैसे निकलेंगे इसलिए कथनी से पहले करनी करके अपनी बात को ठोस आधार दीजिए।

संचय का दुष्परिणाम

त्याग से चेहरा चमकता है, भोग से चेहरा कुम्हला जाता है। मधुमक्खी श्रम करके मधु संचय करती है पर उसे दूसरे लूट ले जाते हैं। एक व्यक्ति ने मधुमक्खी को अपना गुरु बनाया और उससे सीखा कि संचय का गलत परिणाम निकलता है अत: संचय मत करो, करो तो ऐसे ज्ञान, गुण, शक्तियों का संचय करो जिन्हें कोई छीन ना सके।

भगवान कहते हैं, ''भक्तों को सर्व प्राप्ति कराने का आधार है आपकी 'इच्छा मात्रम् अविद्या' की स्थिति। जब स्वयं 'इच्छा मात्रम् अविद्या' हो जाते हो, तब ही अन्य आत्माओं की सर्व इच्छाएँ पूर्ण कर सकते हो। 'इच्छा मात्रम् अविद्या' अर्थात् सम्पूर्ण शक्तिशाली बीजरूप स्थिति। जब तक मास्टर बीजरूप नहीं बनते, बीज के बिना पत्तों को कुछ प्राप्ति नहीं हो सकती। अनेक भक्त आत्माएँ रूपी पत्ते जो सूख गये हैं, मुरझा गये हैं उनको फिर से अपनी बीजरूप स्थिति द्वारा शक्तियों का दान दो।''

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

आवश्यकता है

निम्नलिखित पदों पर ग्लोबल हॉस्पिटल नर्सिंग स्कूल एवं नर्सिंग कॉलेज, तलहटी, आबू रोड़ में सेवा हेतु ग्रेजुएट डिग्री धारक (Graduate degree holders) भाई-बहनों की आवश्यकता है –

1. बालिका छात्रावास के लिए हॉस्टल वार्डन एवं सहायक हॉस्टल वार्डन
2. लडकों के छात्रावास के लिए सहायक हॉस्टल वार्डन
3. ऑफिस सहायक (female only) प्रिन्सिपल ऑफिस हेतु

संपर्क करें: 9414143717,
दिन में 9 बजे से 5 बजे तक।
बायोडाटा भेजने के लिए ईमेल :
ghrchrd@ymail.com

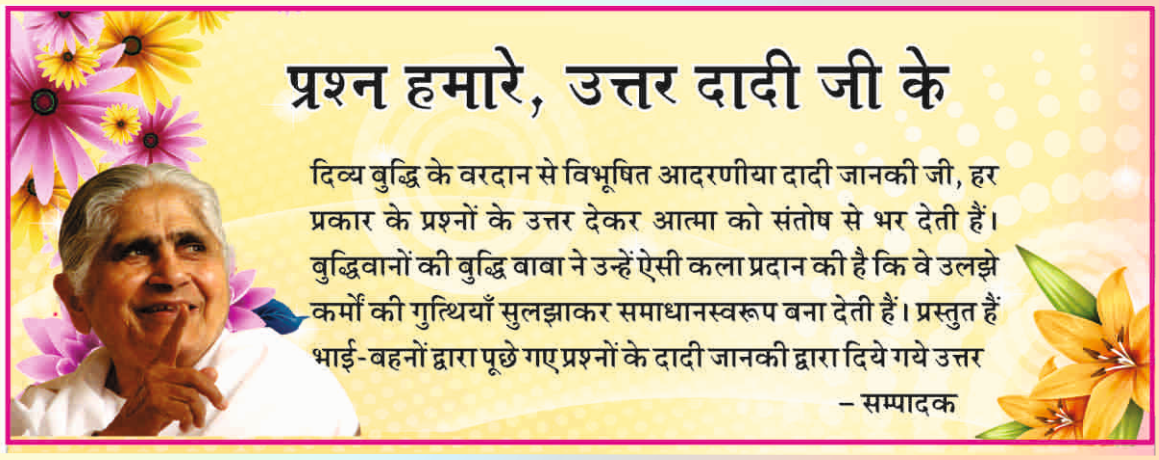

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्न: मन, वाणी, कर्म, तन, धन कैसे सफल होंगे?

उत्तर: जैसी हूँ, वैसी हूँ, बाबा की हूँ, जो बाबा को अच्छा लगता है वो करूँगी। जो फलाने को अच्छा लगता है वो करने की हिम्मत नहीं होगी इसलिए जो बाबा को अच्छा लगता है वही करूँगी, यह प्यार और रिगार्ड है बाबा के लिए। जो बाबा को अच्छा लगता है वो करने से ऑटोमेटिक मन, वाणी, कर्म, तन, धन सफल होंगे। फिर बाबा ने ड्रामा की नॉलेज दी है, तो ऐसा कर्म करो जो प्रालब्ध अच्छे से अच्छी बन जाये। मेरी तो 21 जन्म की बादशाही में भी आँख नहीं डूबती, 84 जन्म ही अच्छे होंगे, मुझे गैरंटी है।

प्रश्न: बाबा के प्यार का शरीर पर क्या प्रभाव है?

उत्तर: ब्रह्मा बाबा को देखती हूँ, उनका अन्तिम जन्म कैसा है, हमारा भी कोई कम नहीं है। बाबा के अन्तिम जन्म में भी बुढ़ापा नहीं दिखाई पड़ा, कोई चिन्ह बुढ़ापे का नहीं था अन्त तक। तो इतना ख्याल करना चाहिए ना, मेरा बूढ़ापन न दिखाई पड़े। बाबा का प्यार जवान बना देता है, जवान माना लड़ाई-झगड़ा करने में जवान नहीं, याद और सेवा का बैलेंस रखने में जवान। खुद में विश्वास, बाबा में विश्वास, औरों का मेरे में विश्वास। प्रैक्टिकल लाइफ में बाबा का मेरे में विश्वास हो, यह कम बात है क्या! जब कोई बात होती है तो कहते हैं ना, ताली दो हाथों से बजती है, ऐसे तो नहीं बजती है। विश्वास भी दोनों तरफ का होगा ना। बाबा कहेंगे, बच्चे किसके हो? हाँ, बाबा हम ऐसे हैं। क्या पढ़ाई है? अल्फ और बे। जो अल्फ और बे – यह पढ़ाई नहीं पढ़ सकता है वो क्या पढ़ेगा, ए बी सी डी। ए आत्मा, बी बाबा, सी चिल्ड्रेन हैं ना बाबा के, डी ड्रामा है। 'क्यों' लिखना कठिन लगता है और क्यू में खड़ा होना शान नहीं है। राजाई में आने वाला कभी भी क्वेश्चन खड़ा करे तो राज्य पद गँवा देगा। बाबा का मेरे में बहुत विश्वास है कि इस बच्ची को मैं जो समझाऊंगा वो जा करके औरों को समझायेगी। बाबा की दुआयें दिल से मिलती हैं इसलिए कैसा भी शरीर है। किसी ने कहा, मैं नहीं चल सकती। मैंने कहा, भले बैठो। बाबा से शरीर को दृष्टि दिलाओ, बस। यह विधि है। बाबा से दृष्टि मांगते नहीं हैं, बाबा आपेही देते हैं। जो करना है अब कर लें, कल किसने देखा। आप लोग प्लान बनाने में टाइम लगा देते हो, अब तो करो ना। जो बाबा के लिए कुछ करता है, थोड़ा भी कुछ करता है, बाबा उसको बहुत देता है। मुझे तो गैरंटी है, अन्त मते सो गति अच्छी होगी। ऐसे नहीं, बूढ़ी हो गई हूँ, क्या करूँ, कौन सेवा करेगा, नहीं।

प्रश्न: शिव बाबा को प्यारा कौन लगता है?

उत्तर: जो समय को सफल करता है वो बाबा को प्यारा लगता है इसलिए समय को सफल करो। संगम का समय बड़ा खज़ाना है, हम समय को सफल करते हैं तो बाबा हमारे से खुश है। मैं सिर्फ यही देखती हूँ, बाबा मेरे से

खुश है? न सिर्फ बाबा की याद में बैठती हूँ पर बाबा खुश है? शरीर की कोई हलचल भी होगी, फिर भी प्रकृति समय पर साथ देती है क्योंकि बाबा ने ऑर्डर किया हुआ है साथ देने का।

प्रश्नः दूसरे की गलती देखने के क्या नुकसान हैं?

उत्तरः मेरी सेवा क्या है? त्यागमूर्त, तपस्वीमूर्त के हर कदम में नेचुरल सेवा समाई हुई है। शान्ति में रहने की सेवा, कम से कम आधा घण्टा शान्ति में बैठो। अगर आधा घण्टा मैं शान्ति में न बैठ सकी, अपने को समय नहीं दिया, तो कोई समय फिर आधा घण्टा वेस्ट करने के लिए माया का रूप ऐसा आयेगा जो मेरा गला घुटेगा। यदि हम दूसरे की गलती देखते हैं, क्या उसका यह कारण है कि वो गलती हमारे में भी है? समझो किसी की गलती मैंने देखी, ले ली तो मेरे में जो अच्छाई है वो आप ले नहीं सकेंगी। तेरी गलती मेरे अन्दर आ गई और मैंने उसको रिपीट किया तो मेरे जो गुण हैं वो चले गये, वह इन्फेक्शन आ गया। तो मैं इस बात की बहुत परहेज रखती हूँ। कभी कोई मुझे नहीं कह सकता है, तुम देखती नहीं हो ना! तुमको पता नहीं है ना, यह कैसी है, ऐसा कोई नहीं बोल सकता है।

औरों की कमी देखना, यह बहुत बड़ी कमी है, इससे बचाओ अपने को। सबका अपना-अपना वन्डरफुल पार्ट है, हरेक को भगवान अपना बनाके पाप की दुनिया से दूर चलने में साथ दे रहा है। दुनिया में कहाँ-कहाँ से, किस-किसको चुन-चुन करके बाबा ने सुख, शान्ति, प्रेम, आनन्द में मगन कर लिया है। सेवा, वायुमण्डल, वातावरण सुख देता है। हम और कुछ नहीं कर सकते हैं, सेवा बहुत हो रही है, हमको सिर्फ खुश रहना है, हल्का रहना है तभी उन्हें लाइट का अनुभव होगा। जहाँ बाबा बिठाता है वहाँ अच्छा है, यह मेरा भाग्य है, भाग्य बनाते जाओ। एक है गुण, दूसरी है विशेषता, तीसरी है खूबी। हरेक में कोई न कोई अच्छा गुण है। कई हैं जो सेवा में व्यस्त रहते भी मस्त रहते हैं। वे किसी का परचिंतन न सुनेंगे, न करेंगे। थोड़ा भी परचिंतन होगा तो स्वदर्शन चक्र घुमा नहीं सकेंगे इसलिए पास्ट इज़ पास्ट। कोई कहता है, मेरा फलाना बीमार है, अरे, वह वहाँ बीमार है, तुम्हारी शक्ल यहाँ ऐसी क्यों हुई है? यहाँ से वायब्रेशन दे दो। मैं बीमार हूँ, यह शब्द भी क्या है, मैं कहूँ बीमार हूँ, तो बाबा मदद नहीं करेगा। बाबा की मदद ऑटोमेटिक मिलती रहती है, मिलती रहेगी, गैरंटी है परन्तु लेने वाला लेवे ना। वो सो जाता है तो बाबा क्या करेगा! तो किसी का अवगुण न देखना, न सोचना, न बोलना, जो बाबा सिखाते हैं वही बोलना है।

प्रश्नः ड्रामा के ज्ञान से स्थिति अचल, अडोल बनती है, कैसे?

उत्तरः ड्रामा की नॉलेज खुद को अचल, अडोल बनाती है और औरों को शुभ भावना पहुँचाती है। मैं साक्षी हो करके एक-एक को देखती हूँ, सबको पूछती हूँ, किसको शुभ भावना पहुँचती है? भगवान की मेरे लिए अन्दर की भावना है, तभी यहाँ बैठी हूँ। वह भी छोड़ता नहीं है, मैं भी नहीं छोड़ती हूँ। थोड़ा ऐसे करूँ ना तो फिर मैं अकेली कहाँ जायेंगी? कभी-कभी थोड़ा शरीर को कुछ होता है तो बैठके रोऊँ क्या? नहीं। कोई हर्जा नहीं है, ठीक हो जायेंगी। योगबल से सच्चाई, प्रेम और विश्वास पहुँचता है। आप लोग सारा दिन क्या करते हो? जो भी बाबा के डायरेक्शन हैं सेवा के लिए, कोई न कोई प्रैक्टिकल करते चलो। कोई प्लान नहीं है, कोई थकावट नहीं, कोई पैसे की बात नहीं, यह कुदरत का खेल बहुत ही अजब है। भगवान का बनके देखो तो सही कि भगवान क्या-क्या और कैसे करता है इसलिए गायन है बुद्धिवानों की बुद्धि है। हरेक की जीवन-कहानी से देखें ना, बाबा ने क्या से क्या बनाया है। बाबा के थोड़े शब्द भी अगर प्रैक्टिकल काम में लाते हैं तो व्यर्थ तो क्या, जरूरी ख्याल भी मुझे नहीं करने का है। कराने वाला आपेही एक्यूरेट करा लेता है। ❖

'पत्र' संपादक के नाम

ज्ञानामृत पत्रिका बेहद अच्छी लगती है। इसे पढ़कर उमंग-उत्साह बढ़ जाता है। रमेश भाई जी का लेख पढ़कर साकार मम्मा-बाबा की भासना आती है और ऐसा लगता है जैसे सामने बैठकर अनुभव सुन रहे हैं। ज्ञान के अन्य गुह्य रहस्य भी स्पष्ट होते हैं। बहुत-बहुत दिल से शुक्रिया।

– ब्र.कु.रेणु, बहादुरगढ़

'ज्ञानामृत' का जून, 2015 का अंक पढ़ने को मिला, बेहद पसंद आया। आज देश भर में जहाँ हिंसा, मारधाड़, चोरी, डकैती की घटनाएँ घट रही हैं व पत्र-पत्रिकाएँ अपराधिक समाचारों से भरे रहते हैं, ऐसे समय में 'ज्ञानामृत' जैसी धार्मिक पत्रिका, इतने कम मूल्य में पाठकों को मिल रही है, जानकर बेहद खुशी हुई। सम्पादक मण्डल ने समुद्र मंथन कर लेखों का चयन किया। राजयोग पर प्रकाशित यह अंक काफी सराहनीय लगा जिसके लिए लेखकों को साधुवाद। संजय की कलम से 'भारत का प्राचीन एवं वास्तविक योग' तथा सम्पादकीय 'राजयोग की वैज्ञानिक विधि और विभिन्न अवस्थाएँ' काफी सटीक, चिंतन-मनन योग्य व जीवन में आत्मसात करने योग्य लगे। हर पृष्ठ पर अनमोल वचन भी काफी प्रेरणादायक, शिक्षाप्रद व आत्मसात करने योग्य हैं। राजयोग से सारे पाप नष्ट होते हैं व मन को अपार सुख एवं शान्ति मिलती है, जो अन्यत्र असंभव है। 'ज्ञानामृत' पत्रिका सच्ची मार्गदर्शक, पथ-प्रदर्शक व सच्ची अभिभावक है।

– सुनील कुमार माथुर, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

ज्ञानामृत की बात निराली है

ब्रह्माकुमार मुकेश, सागर (म.प्र.)

जीवन की बगिया को, सदगुणों से महकाती है,
पतझड़ के मौसम में भी, संदेश खुशी का लाती है,
सुख-शांति से भरी हुई प्याली है,
ज्ञानामृत की तो बात निराली है।

पिलाकर अमृत ज्ञान का, मन की प्यास बुझाती है,
तपत बुझा कर भीतर की, शीतल हमें बनाती है,
मिलती यह प्रभु की सौगात निराली है,
ज्ञानामृत की तो बात निराली है।

शुभ संकल्पों के दीप जलाती, अज्ञान अंधकार दूर भगाती,
लाइट (हल्का) रहना हमें सिखाती, लाइट (ज्ञान) देना हमें सिखाती,
मन, बुद्धि में भरती हरियाली है,
ज्ञानामृत की तो बात निराली है।

पत्रिका तो बहुत हैं जहान में, जैसे तारे आसमान में,
पर फैले जिसकी चाँदनी मन के जहान में,
चाँद जैसी कुदरत की करामात निराली है,
ज्ञानामृत की तो बात निराली है।

मिलती है 'प्रति' हर माह इसकी, फिर भी अखियाँ देखें राह इसकी,
महिमा है वाह-वाह इसकी, दिल से न मिटे कभी चाह इसकी,
नवीनता की ओढ़े पोशाक निराली है,
ज्ञानामृत की तो बात निराली है।

सच्चा गीता ज्ञान लिये, प्रभु की सच्ची पहचान लिये,
मधुबन की मुसकान लिये, खुशियों का पैगाम लिये,
बहती ज्ञानगंगा दिन-रात निराली है,
ज्ञानामृत की तो बात निराली है।

हर एक दादी को अपना समझता था

गुलजार दादी

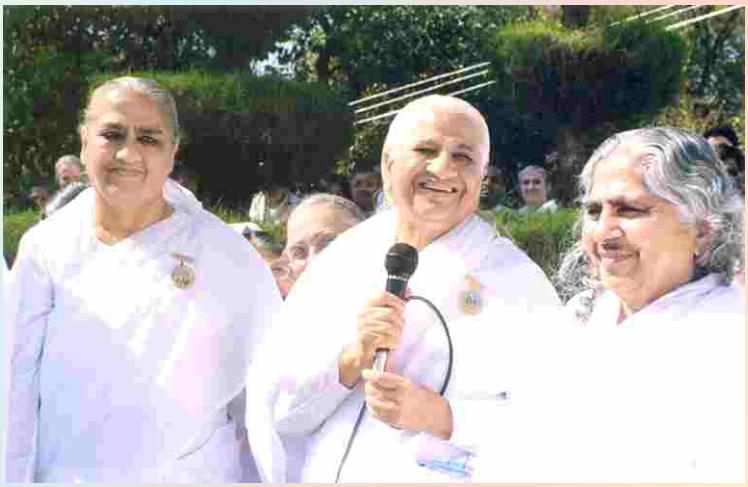

दादी प्रकाशमणि जी में यह विशेषता थी कि वो सभी को मिलाकर एक कर देती थी। भिन्न-भिन्न संस्कार वालों के संगठन में भी दादी हमेशा प्यार से मिलती और सबको बाबा की याद दिलाती। दादी कहती थी, भले कुछ भी देखो, करो लेकिन कराने वाला कौन? कहो, मेरा बाबा। दादी बाबा को सदा साथी बनाकर रही, बाबा में मेरापन अनुभव किया तो सब साथी बन गये। तो जितना बाबा में मेरापन लायेंगे उतना सब अपने लगेंगे।

दूसरे की समस्या को अपनी समस्या मानती थी

दादी बाबा के साथ-साथ सबसे प्यार करती थी, ऐसे नहीं सिर्फ बड़ों-बड़ों से प्यार करती थी, नहीं, छोटों के ऊपर और ही ध्यान देती थी, उनकी बात बहुत ध्यान से सुनती थी, उनके साथ प्यार से बैठती थी। दादी का सबसे दिल का प्यार था। यदि किसी को कोई बीमारी या अन्य समस्या होती तो दादी सुन करके सहन नहीं कर सकती थी, उसको किसी न किसी रीति से मदद करती थी। दादी को कभी कोई समस्या सुनाता था तो दादी समझती थी, यह मेरी समस्या है, खास समय देकर बुला करके बात करती थी, कैसे भी करके उसे ठीक करने का प्रयत्न करती थी, छोड़ नहीं देती थी कि इसके पीछे मैं क्यों पड़ूँ, नहीं। सबके लिए कुछ न कुछ समाधान करती थी।

दिल का स्नेह देती थी

दादी जी के सामने कोई भी आता था तो उसकी नब्ज पहचान जाती थी, उससे ऐसे प्यार से चलती थी, जैसे भाई-बहन का प्यार होता है। इसलिए हर एक दादी को अपना समझता था और दादी की हर बात बहुत सम्मान से सुनता था। दादी का दिल का स्नेह था, दादी कभी बाहर का स्नेह नहीं करती थी। समान उम्र वाली को समझती थी, यह मेरी सखी है। छोटी को समझती थी, यह मेरी छोटी बहन है। चलते हुए अगर किसी से बार-बार पूछो, ठीक हो, कैसे हो... तो वो क्या महसूस करेगा? यह मेरी है। ऐसे दादी बड़ी होते भी छोटों को पूछती थी और अपने समान समझती थी।

एक-दो को मिला देती थी

दादी का सभी से प्यार था लेकिन सभी नियमों पर ठीक चलें, इसके लिए प्यार से समझाती भी थी। कभी कोई डिस्टर्ब होता तो दादी को सहन नहीं होता था। सदा यही लक्ष्य रखती थी, पहले डिस्टर्बेन्स को ठीक करना है। दादी उसको कहती थी कि तुम डिस्टर्ब हो तो मैं भी डिस्टर्ब होंगी, फिर फौरन ही समाधान करती थी। दादी एक-दो को आपस में मिला देती थी। संगठन में तो छोटे-बड़े सब होते हैं। दादी मिलाने में बहुत होशियार थी। किसी न किसी तरीके से मिलाके ही छोड़ती थी। ❖

ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 21

ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

यज्ञ कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने के बारे में मैं लेखों की शृंखला लिख रहा हूँ। ब्रह्मा बाबा ने जब मुझे ट्रस्ट की जिम्मेवारी सौंपी तो पत्रों द्वारा मार्गदर्शन दिया। ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद अव्यक्त बापदादा से जो मार्गदर्शन मिला और मैंने जो Master of Divine Administration (MDA) के बारे में बातें सीखीं, उसके बारे में इस लेख में लिख रहा हूँ।

यज्ञ कारोबार संचालन की अलौकिक विधि है, अगर हम इस विधि अनुसार यज्ञ कारोबार चलाते हैं तो भविष्य में विश्व कारोबार भी संभाल सकते हैं। ब्रह्मा बाबा ने मुझे पत्र लिखा कि बच्चे, ट्रस्ट का कारोबार ईमानदारी से होना चाहिए, कारोबार में किसी भी प्रकार की ऊपर-नीचे बात नहीं होनी चाहिए। यज्ञ कारोबार शीश महल जैसा होना चाहिए। जैसे शीश महल में कोई बात छिपती नहीं है, ऐसे ही यज्ञ कारोबार में की गई छोटी-सी गलती भी जल्दी ही सबकी निगाहों में आ जाती है। इसलिए यज्ञ कारोबार आपको शीश महल की भाँति संभालना है। किसी की शिकायत नहीं आनी चाहिए कि यज्ञ कारोबार में यह गलती हुई। इसी कारण जब भी मैं यज्ञ कारोबार के बारे में निर्णय लेता हूँ तो याद रखता हूँ कि इसके बारे में अपने दैवी परिवार का क्या विचार होगा।

बाबा ने कहा कि यज्ञ कारोबार लोकपसंद, स्वपसंद एवं प्रभुपसंद होना चाहिए, नहीं तो लोग रिजेक्ट कर देंगे। अब्राहम लिंकन ने भी कहा था, Government of the people, by the people, for the people. इसी प्रकार से यज्ञ कारोबार भी सबके लिए सबके सहयोग से होना चाहिए। इसलिए मेरी यज्ञ कारोबार करने वालों से नम्र विनती है कि यज्ञ कारोबार को शीश महल की तरह पारदर्शक रखें ताकि किसी का विरोध न हो।

मैं यहाँ पर अपनी एक छोटी-सी गलती का मिसाल देना चाहता हूँ। एक सेवाकेन्द्र की बहन सेवाकेन्द्र के लिए भवन बना रही थी। अपने लौकिक माता-पिता से उसे 25,000 रुपये भवन निर्माण के लिए मिले। उस बहन ने मुझसे कहा कि अगर मैं क्लास में सबको बताऊँगी कि मुझे 25,000 रुपये मेरे माता-पिता से मिले हैं तो क्लास के भाई-बहनें इतने कम पैसे इकट्ठे करेंगे अर्थात् अगर 5 लाख का खर्चा होगा तो 4,75,000 ही इकट्ठा करेंगे। परंतु इसके बदले अगर मैं सबको कहूँ कि 25,000 रुपये यज्ञ से मिले हैं तो सबका उमंग-उत्साह बढ़ेगा कि जिस कार्य के लिए यज्ञ की तरफ से सहयोग मिला है, उस कार्य में हमें भी पूरा सहयोग देना चाहिए। मैंने इस बात की छुट्टी दी। उस बहन ने क्लास में सबको यही बताया कि मुझे 25,000 रुपये यज्ञ से मिले हैं। जिज्ञासु खुश हो गये। उन्होंने यह बात फैला दी कि यज्ञ से हमारे मकान को 25,000 रुपये मिले हैं। यह बात सब जगह चली गई कि अभी यज्ञ मकान बनाने के लिए 25,000 रुपये देता है। परिणामरूप करीब 4 सेवाकेन्द्रों से आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी के पास एप्लीकेशन आई कि हमें भी मकान बनाना है, इसलिए हमें भी यज्ञ की तरफ से 25,000 रुपये दिये जायें ताकि हमारे भी भाई-बहनों का उमंग-उत्साह बढ़े। दादी प्रकाशमणि जी ने मुझे बुलाया और पूछा कि यह 25,000 रुपये की क्या बात है? मैंने कब इसकी छुट्टी दी और आपने कब उस सेन्टर को दिये? मैंने दादी जी को बताया कि यज्ञ की भंडारी से हमने एक पैसा भी नहीं दिया है, यह पैसा उस बहन को अपने लौकिक माँ-बाप से मिला है पर चूँकि यज्ञ का नाम कहने से यज्ञ-वत्सों का उमंग-उत्साह बढ़ता है, इस कारण से मैंने उस बहन को ऐसा कहने की छुट्टी दी। मेरी बात सुन दादी गंभीर हो गये और

कहा कि यज्ञ कारोबार में झूठ नहीं बोलना चाहिए। झूठ कभी भी छिप नहीं सकता। देखो, आपने एक छोटा-सा झूठ बोला, परिणाम क्या निकला कि सब जगह बात फैल गई और इन 4 सेवाकेन्द्रों की तरफ से सहयोग की एप्लीकेशन भी आ गई। अब आप बताओ कि आप उन्हें कैसे लिखेंगे कि यज्ञ ने 25,000 रुपये नहीं दिये हैं जबकि आपने ही ऐसा बोलने की उस बहन को छुट्टी दी थी। इसलिए उस बहन की गलती नहीं है, आपकी गलती है। यज्ञ का कारोबार सत्यता के आधार पर चलना चाहिए, आज नहीं तो कल झूठ पकड़ा ही जाता है। उस समय मुझे याद आया कि भगवान के घर में देर है परंतु अंधेर नहीं है। इसलिए अंग्रेजी में कहावत है, You can fool all the people some of the time and some of the people all the time, but you cannot fool all the people all the time. भावार्थ है कि सबको हमेशा के लिए मूर्ख नहीं बनाया जा सकता, एक न एक दिन बात खुल ही जायेगी।

अव्यक्त बापदादा के साथ भी मेरा एक अनुभव है। एक भाई ने यज्ञ कारोबार में पैसे की बात में कुछ ऊपर-नीचे किया। मैं तो कानून का अनुभवी हूँ। मैंने उस भाई के खिलाफ कानूनी कार्यवाही करने का विचार किया ताकि कोई अन्य ऐसा गलत कार्य न करे। फिर मुझे ख्याल आया कि मैं अव्यक्त बापदादा से पूछूँ कि मैं कानूनी कार्यवाही करूँ या नहीं। मेरा संदेश लेकर गुलजार दादी जी वतन में गये। गुलजार दादी ने बाद में मुझे संदेश सुनाया जो इस प्रकार था – अव्यक्त बापदादा ने मुझे (रमेश भाई) सूक्ष्मवतन में इमर्ज किया और कहा कि बच्चे, कानूनी कार्यवाही में क्यों समय बिगाड़ते हो। कानून द्वारा सत्य का सिद्ध होना बहुत कठिन है इसलिए आप यह बात मेरे पर छोड़ दो। आप जानते हो कि मेरा एक चौथा रूप भी है, वह है धर्मराज का। आपकी कचहरी में तो सच का झूठ हो जाता है और झूठ का सच हो जाता है परंतु मेरी कचहरी में सच सच ही रहेगा और झूठ झूठ ही रहेगा, झूठ का सच नहीं हो सकता। बाबा ने बहुत कड़े शब्दों में कहा कि आखिर वो आत्मा जायेगी कहाँ, मेरे पास तो आयेगी ही, मैं उसका हिसाब-किताब देख लूँगा इसलिए आपको इस बात में समय बिगाड़ने की जरूरत नहीं है, आपका फर्ज है ईश्वरीय सेवा करना तथा कराना।

मैंने यह मिसाल इसलिए लिखा कि कहीं गलती से हम शिवबाबा के धर्मराज रूप को भूल न जायें और गलती न कर बैठें क्योंकि आखिर में तो सबको धर्मराज के पास जाना ही होगा। जैसे दुनिया में कहते कि दूध का दूध और पानी का पानी, ऐसे उसकी कचहरी में सच और झूठ का फैसला होता है। अभी तो विश्व परिवर्तन के दिन नज़दीक आ रहे हैं इसलिए परमात्मा का चौथा स्वरूप (बाप, शिक्षक, सतगुरु के अलावा चौथा रूप धर्मराज का) दिन-प्रतिदिन प्रकट होता जायेगा।

इसी संदर्भ में मैंने एक बार अव्यक्त बापदादा को कहा था कि आप अपना धर्मराज का स्वरूप धीरे-धीरे प्रकट कीजिये क्योंकि हम भाई-बहनें आपका वह स्वरूप भूल जाते हैं और फलस्वरूप गलतियाँ कर बैठते हैं। अव्यक्त बापदादा ने जवाब दिया कि अभी तो मेरा बाप का स्वरूप है, अभी जो अपनी गलतियों को महसूस कर माफी मांगता है, उसकी सज़ा को मैं आधा माफ कर देता हूँ पर एक बार मैंने धर्मराज का रूप धारण कर लिया तो उसके बाद माफी की बात भी नहीं हो सकती। फिर जिसने जो कर्म किये होंगे, उसका उसी प्रकार से फल मिलेगा। तब मैंने भी समझा कि धर्मराज की कचहरी में अच्छे कर्मों का अच्छा फल और बुरे का बुरा फल ही मिलेगा।

इसी संबंध में मुझे एक हँसी की बात याद आती है। बहुत समय पहले मैंने एक ड्रामा लिखा था 'धर्मराज की कचहरी' जो हमने मुंबई और दिल्ली में प्ले भी किया था। वह ड्रामा तो एक सैम्पल के रूप में दिखाया गया था पर वह दिन दूर नहीं जब धर्मराज की कचहरी वास्तविक कचहरी हो जायेगी और उसी द्वारा सबको मुक्ति-जीवन्मुक्ति का

रास्ता प्राप्त होगा। धर्मराज के रूप में परमात्मा अनेक प्रकार की सज़ायें दे सकते हैं। सतयुग-त्रेतायुग में हमारे पद का आधार भी हमारे वर्तमान के कर्म ही हैं। वर्तमान समय अल्पकाल की प्राप्ति के लिए अगर हम अपने कर्मों पर अटेन्शन नहीं देंगे तो धर्मराज हमें सतयुग में आने नहीं देंगे अर्थात् एक छोटी सी गलती के कारण हम कल्प-कल्प की बाजी हार जायेंगे और श्रेष्ठ पद से भी वंचित हो जायेंगे। इसलिए हमें वर्तमान संगमयुग में कर्म करते समय ध्यान रखना चाहिए कि इसका फल क्या होगा।

शास्त्रों में कथा प्रसिद्ध है कि ऋषि वाल्मीकि पहले वाल्या डाकू थे। लोगों को लूटते थे। एक बार नारद मुनि ने वाल्या डाकू से पूछा कि तुम यह बुरा कर्म क्यों करते हो? वाल्या डाकू ने कहा, अपने परिवार के जीवन निर्वाह के लिए। तब नारद ने पूछा कि क्या तुम्हारा परिवार तुम्हारे पापों का भागीदार बनेगा? वाल्या डाकू ने कहा कि वे मेरे हर सुख-दुख में साथ देते हैं तो मेरे पापकर्मों में भी मेरा साथ देंगे। नारद मुनि ने कहा कि जाओ, पूछकर आओ। वाल्या डाकू ने परिवार वालों से पूछा तो परिवार वालों ने कहा कि तुम्हारा कर्त्तव्य है हमारी पालना करना। तुम कैसे कमाई करते हो, उसके लिए तुम ज़िम्मेवार हो, हम नहीं। तुम्हारे पाप कर्मों में हम भागीदार नहीं हैं। यह सुनकर वाल्या डाकू की आँखें खुल गईं और वह ऋषि वाल्मीकि बन गया।

ऋषि वाल्मीकि की कहानी से हमें यह सीखना चाहिए कि कभी-कभी हम अपने परिवार, समाज के कारण गलत तरीके से कमाई करने का प्रयत्न करते परंतु जैसे वाल्मीकि के रिश्तेदार उसके गलत कर्मों में भागीदार नहीं बने, वैसे ही ध्यान रहे कि हमारे गलत कर्मों में हमारे परिवार वाले या समाज वाले भागीदार नहीं बनेंगे। वे धर्मराजपुरी में ऐसा नहीं कहेंगे कि हमारे कारण आपने गलत कर्म किया तो सज़ा में हम भी भागीदार बनेंगे। उस समय पश्चाताप के अलावा हमारे पास कोई मार्ग नहीं रह जायेगा, इसलिए अभी परिवर्तन करें। सच्चाई, ईमानदारी, प्रामाणिकता से कारोबार करने का लक्ष्य रखें तो अच्छा होगा। आजकल की दुनिया में रिश्वत का कारोबार हो गया है। यदि रिश्वत के आधार पर हमने कमाई की तो अंत में उसकी सज़ा भोगने को भी तैयार रहना होगा।

हम सब जानते हैं कि परमात्मा त्रिकालदर्शी भी हैं और इसलिए परमात्मा से गलतियाँ छिपाना बहुत कठिन है। इस बात का अनुभव भी एक बार हमने किया। उस समय मुंबई में सेवाकेन्द्र पर भट्ठी चल रही थी। दादी पुष्पशांता भोग लेकर बाबा के पास गई तो बाबा ने सूक्ष्मवतन में सारी क्लास को इमर्ज किया और सभी भाई-बहनों के जीवन के बारे में बताते रहे कि यह ऐसा करता, वह ऐसा करता। इस प्रकार से सारी क्लास की वास्तविकता दादी को दिखाई। दादी पुष्पशांता ने ध्यान से नीचे आकर हम बच्चों को यही बताया कि धर्मराज अर्थात् परमात्मा से हम कोई बात नहीं छिपा सकते। अगर कोई बात छिपा नहीं सकते तो गलत काम क्यों करना चाहिए। जो सावधानी पुष्पशांता दादी द्वारा परमात्मा ने हम बच्चों को दी, उसे जीवन में धारण करें तो कई गलत कर्त्तव्यों से बच सकते हैं और सतयुग में श्रेष्ठ पद प्राप्त कर सकते हैं।

मुंबई में हमने योग की प्रदर्शनी बनाई, उसके लिए ब्रह्मा बाबा को पत्र लिखा कि प्रदर्शनी के अंतिम चित्र की लिखत बनाकर आप हमें भेजिये। यह अंतिम चित्र था जिसमें पृथ्वी मृत्यु शैया पर है, ऊपर से एटम बम आ रहे हैं और साथ में एक संन्यासी बैठकर कहता है कि अभी तो कलियुग बच्चा है। ब्रह्मा बाबा ने इस चित्र के नीचे लिखकर भेजा – ''आपका भाग्य आपके हाथों में है, आपका भाग्य ना कोई बना सकता है, ना बिगाड़ सकता है, अपने भाग्य के आप भाग्यविधाता हो।'' यह सावधानी अगर हम सब अपने जीवन में धारण कर लें तो हम कई बार जो बहानेबाजी करते हैं, 'इसके कारण ऐसा हुआ' उससे बच सकते हैं और अपने जीवन को सादा और सरल बना सकते हैं क्योंकि यह दैवी परिवार शीश महल है और रहेगा। ❖

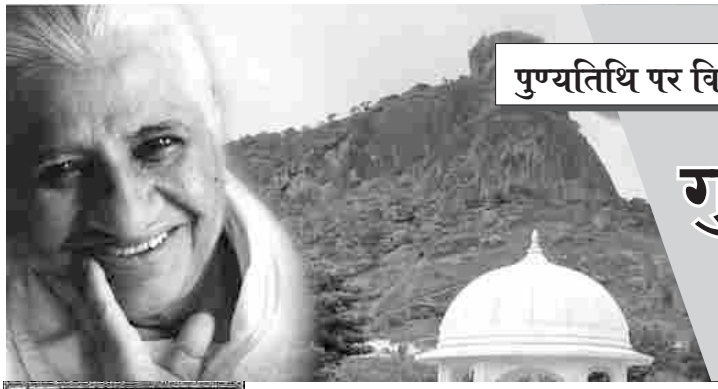

पुण्यतिथि पर विशेष...

गुणमूर्त दादी जी

ब्रह्माकुमार सुभाष, ज्ञानसरोवर

मुझे अच्छी तरह से याद है, जब जानकी दादी जी या जगदीश भाई जी विदेश से आने वाले होते थे तब दादी जी आंगन में कुर्सी डालकर बैठ जाती थी। कभी-कभी तो दोपहर के तीन भी बज जाते थे। उसके बाद मिलन का वो अनोखा नज़ारा सामने आता था जिसके लिए दिल कहता था, देखते ही रहें। फिर साथ-साथ भोजन और रूहरिहान का ऐसा दौर चलता था मानो दो बिछड़े दोस्तों का चिरकाल के बाद मिलन हो, फिर उनके बीच और कोई नहीं आ सकता।

एक कुमारी दादी जी से छुट्टी लेने गयी, उसी दिन बाबा आने वाले थे। रात्रि नौ बजे की गाड़ी थी। दादी जी ने पहले पूछा, बाबा को छोड़कर तुम क्यों जा रही हो? फिर कहा, दादी जी तुम्हें छोड़ने का प्रबंध करेगी। दादी ने अव्यक्त बापदादा की मुरली पूरी सुनी, फिर बाबा से उस कुमारी को मिलाकर उसे स्वयं अपनी कार में भेजने का इन्तजाम किया। वो कुमारी अब बड़ी टीचर बन गई है लेकिन वो बात कभी भूल नहीं सकती। ऐसा था प्यारी दादी जी का प्यार।

योग की मस्तानी

सन् 1986 की बात है, दादी जी को संकल्प आया कि चलो आज नक्की झील चलते हैं, वहाँ रावण घाट पर शाम का योग करते हैं। सारा झुंड निकल पड़ा। शिव शक्ति सेनानी आगे-आगे और हम सभी पांडव व शक्तियाँ पीछे-पीछे योगयुक्त व मौन अवस्था में। एक घण्टा वहाँ योग करने के बाद बहुत शक्तिशाली वातावरण हो गया, वहाँ से गुज़रने वाले लोगों को भी उसका एहसास हो रहा था। अमृतवेले का योग हम मधुबन निवासी छोटे हाल में करते थे। पीछे वाले सोफे पर दादीजी आकर बैठ जाती थी मानो अपने बच्चों को अपने आँचल में लेकर प्रभुमिलन कर रही हो। जैसे ही योग पूरा होता था, हम पीछे मुड़कर बैठते थे, प्यारी दादी जी एक-एक को दृष्टि देती थी। वो एक अलग ही अनुभूति होती थी। इस कारण कितनी भी थकान हो, कभी अमृतवेले का योग मिस करने का दिल नहीं करता था। आज भी कभी उस हाल में जाता हूँ तो दिल गद्‌गद् हो उठता है।

मनोरंजन

कोई भी कलाकार आये, दादी जी उसका कार्यक्रम अवश्य रखती थी। छोटे बच्चों के कार्यक्रम में विशेष रुचि रखती थी। डान्स या किसी भी कला के प्रदर्शन के बाद दादी का दुलार भरा हाथ कलाकार के सिर पर अवश्य ही घूमता था। कार्यक्रम में स्वयं भी अवश्य हाज़िर रहती थी। एक बार उन्होंने हमसे ऐसे ही पूछा, क्यों तुम सांस्कृतिक कार्यक्रम देखने नहीं गये? हमने कहा, अब रुचि नहीं है। हमें लगा, दादीजी हमें शाबासी देंगी लेकिन

दादीजी ने कहा, जब तुम्हारा नाटक होता है और कोई नहीं आये तो कैसा लगेगा? इसलिए कार्यक्रम में हाज़िर रहना माना कलाकारों का उमंग-उत्साह बढ़ाना, यही तो सेवा है। दादीजी की बात हमने स्वीकार की और आगे से ध्यान रखने का वायदा भी किया।

एक विदेशी भाई ने बाबा का बहुत ही सुन्दर व बड़ा झंडा दादी जी को दिया, उन्हें बहुत पसंद आया। मुरली के बाद वे उसे अपनी पीठ पर बाँधकर, ओमशान्ति भवन से किचन तक सभी को दिखाते-दिखाते अन्त में भोली दादी के पास पहुँच गयी थी। वे सभी को यह बता रही थी कि देखो, मेरा बाबा कितना बड़ा है। ऐसे ही एक दिन गार्डन वाले भाई ने एक तितली जैसा फूल सुबह की मुरली के पहले दादी जी को दिया तो उन्होंने उसे अपने बैज पर लगाया और मुरली के बीच में ही सभी को दिखाते हुए कहा, जिसकी रचना इतनी सुन्दर वो कितना सुन्दर होगा!

बचत

पहले बाल कटवाने के लिए मार्केट जाना पड़ता था। मुझे ईशू दादीजी ने दो रुपये बाल कटवाने के लिए दिए, उनमें से 50 पैसे बचाकर मैं जब ईशू दादीजी को वापस देने गया तो दादी जी भी वहीं बैठी थी। ईशू दादी जी ने तुरन्त दादी जी को बताया, देखो बालक 50 पैसे बचाकर लाया है। इस बात पर दादीजी ने बहुत प्यार से शाबासी दी और कहा, यह बाबा के यज्ञ की बचत है, बहुत अच्छा, ऐसी बातें क्लास में बताने लायक हैं। इसी प्रकार किचन में जो भोजन बचता है उसमें से दाल व सब्जी गरम करने से व चावल फैलाकर रखने से खराब नहीं होते। बाबा के सीज़न में लोग रात्रि 12 बजे तक भोजन करते थे। उसके बाद हम खाना गरम करके रखते फिर सुबह उसे प्रयोग करते थे। चावल को फ्राई चावल बनाते, दाल को थेपले में डालते, सब्जी गरम करके खिलाते और रोटी की चूरी या सेलमानी बनाते थे। हर्षित काका इन बातों में मास्टर थे। इतनी अच्छी चीज़ बन जाती थी, सभी बहुत प्यार से खाते थे। यह देखकर हमें बहुत खुशी होती थी। किसी ने इसकी शिकायत कर दी दादी जी के पास। दादी जी ने हम लोगों को बुलाया और पूछा। हम लोगों ने जब सारी बातें बतायी तो दादी जी को बहुत अच्छा लगा। उन्होंने और ही हम लोगों का उमंग-उत्साह बढ़ाया और कहा, बाबा के यज्ञ की असली बचत तो यह है।

प्रेम और शक्ति का संतुलन

एक दिन मैं पोस्ट आफिस में रजिस्ट्री कराने गया लेकिन वहाँ जाकर पता चला कि आज तो रविवार है, फिर मैं मार्केट चला गया। एक दुकान के सामने काफी भीड़ दिखाई दी, मैं भी भीड़ में दाखिल हो गया। वहाँ महाभारत का धारावाहिक चल रहा था। डरते-डरते 15-20 मिनट महाभारत देखकर जैसे ही वापस मधुबन पहुँचा तो एक भाई ने सन्देश दिया कि आपको ईशू दादी ने बुलाया है। यह सुनकर मेरे पैरों तले जमीन खिसक गयी कि पता नहीं, क्या बात है? बाबा-बाबा करते, डरते-डरते आफिस में पहुँचा तो वहाँ दादी जी भी थी। ईशू दादी ने पूछा, भाऊ कहाँ गये थे? मैंने कहा, पोस्ट आफिस। उन्होंने कहा, भाऊ, आज तो इतवार है। मैं समझ गया कि मेरी चोरी पकड़ी गयी। मैंने तुरन्त गलती स्वीकार कर, दादी जी के पैरों के पास बैठ कर एक श्वास में कह दिया, माफ करना दादी जी.... गलती हुई, आगे से कभी नहीं होगी। दादी जी ने कहा, देखो, हम बाबा के बच्चों के लिए यह बात शोभती नहीं, अच्छा...ध्यान रखना। दादी जी ने माफ भी कर दिया और आगे ध्यान भी खिंचवा दिया और भुला भी दिया। यही थी दादी जी की खासियत। फिर कभी वर्णन नहीं करती थी, ना करने देती थी। एक बार मैंने दादीजी को बताया कि फलाना भाई मुझे डाँटता है। दादी जी ने तुरन्त लच्छू दादी को उस भाई को बुलाने को भेजा। पता नहीं, उसे क्या समझाया, उसने दुबारा कभी डाँटा नहीं और ही प्यार करने लगा।

उपस्थिति का बल

दादी जी की उपस्थिति मात्र कोई भी काम में चार चाँद लगा देती थी। देश या विदेश में सेवार्थ चक्कर लगाकर जैसे ही मधुबन आंगन में पहुँचती, वातावरण पुनः चहक उठता मानो हमारी छत्रछाया आ गयी। किसी भी स्थूल कार्य

में दादी जी के पहुँचते ही कई गुणा ताकत आ जाती थी चाहे वो ज्ञानसरोवर के निर्माण जैसा बड़ा कार्य हो या सब्जी काटने जैसा साधारण काम हो। एक दिन भोली दादी जी ने दादी जी को कहा, दादी जी, आजकल समय पर सब्जी कट नहीं रही है। मुरली क्लास के बाद दादी जी स्वयं भोलेनाथ के भण्डारे में आकर सब्जी काटने बैठ गई। फिर क्या था, यह आवाज सारे मधुबन में पहुँच गयी। तुरन्त सभी पांडव व शक्तियाँ सब्जी काटने पहुँचे और तुरन्त सेवा हो गई। गुरुवार को दादीजी का नियम था, मुरली के पहले भण्डारे में जाती, सारी चीज़ों को देखती मानो उनमें अतिरिक्त शक्ति भर रही हों। जब भी उनके पास समय होता, वे बड़े भण्डारे में आकर बैठ जाती। कहती थी, 'मुझे यहाँ बहुत अच्छा लगता है।' अनाज सफाई का काम हो या बोरियाँ उठाने का, उनकी उपस्थिति मात्र से सारे काम चुटकी में हो जाते थे।

निर्मानता की मूर्ति

एक दिन की बात है, एक भाई व मजदूर की आपस में खिटपिट होने के कारण मजदूर वर्ग आग बबूला हुआ और वे उस भाई को मारने के लिए गेट पर एकत्रित हुए। जब दादी जी को पता चला तो वे मेन गेट पर पहुँच गई और उन्हें समझाने की कोशिश की, फिर भी वे लोग मान नहीं रहे थे। वे कह रहे थे, 'आज उसको छोड़ेंगे नहीं, दादी जी, आप बीच में नहीं आओ।' दादी जी ने कहा, 'दादी हाथ जोड़कर आप सभी से माफी मांगती है, उसको तो मैं सज़ा दूँगी ही, दुबारा ऐसी गलती होगी नहीं।' जैसे ही दादी जी ने हाथ जोड़े, सभी पिघल गये। कहने लगे, 'आप तो हमारी माँ हो, हमारी रोज़ी-रोटी की आप ही मालिक हो, आपने तो कुछ किया नहीं, आप हमें शर्मिन्दा मत करो।' दादी जी ने तुरन्त टोली मंगाई और प्यार से खिलाकर सबको विदाई दी।

प्यार भरी समझ

एक बार की बात है, एक बच्चा जूते पहनकर शान्ति स्तम्भ के अन्दर भाग रहा था। दादीजी उसके पीछे-पीछे दौड़ कर समझा रही थी, अच्छे बच्चे ऐसे नहीं करते, बाबा का यह पवित्र स्थान है। फिर उस बच्चे को गोदी में उठाकर बाहर ले आयी, उसे टोली खिलाई और प्यार से समझाया कि शान्ति स्तम्भ भले ही जाना लेकिन जूते उतार कर जाना। बच्चे तो बच्चे होते हैं, बस उनको प्यार मिलते ही हर बात मान लेते हैं। हमारा बताने का तरीका अच्छा होना चाहिए।

दिल का सच्चा प्यार

जितने भी बड़े प्रोजेक्ट होते थे, दादी पहले खुद समझने की कोशिश करती थी कि कम से कम खर्चे में यह कैसे तैयार हो। कई बार निर्वैर भाई जी को समझाते देखा, देखो, बाबा के गरीब बच्चे एक-एक पैसा करके यज्ञ में डालते हैं, उसकी कदर होनी चाहिए। इतना बड़ा ज्ञानसरोवर व शान्तिवन का प्रोजेक्ट सम्पन्न हुआ, इसे दादी जी के प्यार की ही कमाल समझो। मातायें-बहनें छुपा-छुपाकर गठड़ियाँ दादीजी को देकर बाबा के यज्ञ में सफल कर अपना भाग्य बनाती थी। वो दृश्य कभी भूलता नहीं, दादी जी माताओं की भट्ठी में व्हील चेयर पर आयी और ऐसी बीमार अवस्था में भी अपनी बाँहों को इतना बड़ा किया और गले लगा लिया मानो सारे विश्व की माताओं को उसमें समा रही हों। माताओं की आँखों से तो गंगा-जमुना बह चली, यही तो सच्चा प्यार था।

इकॉनोमी की अवतार

गायत्री मोदी माताजी एक बहुत बड़े घराने की माता थी। दादीजी से इतना प्यार था कि उसने दादीजी के लिए हेलिकॉप्टर भी ऑफर कर दिया था लेकिन दादीजी ने अन्त तक स्वीकार नहीं किया। दादीजी को सदा 'कम खर्चा बालानशीन' बच्चे अच्छे लगते थे। वे कहती थी, बाबा के गरीब बच्चों का धन ऐशोआराम के लिए नहीं लगा सकते। दादीजी को सबसे अच्छी कार टाटास्टेट लगती थी। एक तो डीज़ल की होती है और दूसरा डिक्की इतनी बड़ी होती है कि उसमें दादीजी का व जो साथ में जाते थे उनका सारा सामान आ जाता था। दूसरी कार की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। दादी जी की तबीयत जब तक अच्छी थी, तब तक कार बदलने नहीं दी।

दूरदृष्टि

यज्ञ के हित में दादी जी की बड़ी दूरदृष्टि थी, वे सदा ही स्टोर वालों को डायरेक्शन देती थी कि हमारे पास 6 मास

का राशन अवश्य होना चाहिए। संसार में कुछ भी हो, बाबा के बच्चों को दाल-रोटी अवश्य मिले। वे मीटिंग करके पूरे साल का प्रोग्राम बनाकर सेन्टरों पर भेजती ताकि आने वाले मेहमान व बाबा के बच्चे निर्धारित समय पर रिजर्वेशन करा सकें। उन्हें आने में तकलीफ न हो।

जब प्रिंटिंग प्रेस के दिल्ली से आबू आने की बात चली तो मधुबन में चर्चायें होती थीं कि यहाँ इतनी बड़ी प्रेस की क्या जरूरत है लेकिन दादी जी की दूरदर्शिता से प्रेस आबू में आ गई। उससे आज कितना फायदा हो रहा है। बाबा के यज्ञ में आये दिन सम्मेलन, शिविर आदि चलते रहते हैं। नये-नये फोल्डर, किताबें और प्यारे बाबा की मुरलियाँ इस प्रेस से तुरन्त छपकर मिल जाते हैं। इस प्रकार दादी जी द्वारा बाबा सबके सुख का प्रबन्ध करते थे। ऐसी मीठी दादी के गुणों को जीवन में धारण कर हम भी गुणमूर्त बनें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।❖

दादी

सतीश उपाध्याय,
अध्यक्ष - योग समिति,
मनेन्द्रगढ़ (कोरिया)

पूजा वाली थाली दादी
जीवन की खुशहाली दादी

कोना-कोना रोशन कर दे
है इतनी उजियाली दादी

हम हैं फूल सरीखे बच्चे
और बगिया की माली दादी

गिरे कभी जो ठोकर खाकर
पग-पग हमें सम्भाली दादी

हर पल रखती ध्यान हमारा
रहे कभी न खाली दादी

हम तूफानों से लड़ते हैं
हिम्मत देने वाली दादी

देख हमारी मुसकानों को
जैसे सब कुछ पाली दादी

हमको तो हर पल लगती है
फूलों वाली डाली दादी

है पावन त्यौहार सरीखी
होली और दीवाली दादी

शान्तिदूत बन आई धरा पर

ब्रह्माकुमार महेश महावीर, शुजालपुर मंडी (म.प्र.)

सूरत जैसे प्रभु की मूरत
वाणी थी जग की कल्याणी
शान्तिदूत बन आई धरा पर
नैनों में समाया नूर रूहानी
युगों-युगों तक गूंजेगी
दादी तेरी अमर कहानी

बाल्यकाल से सखा बनाया
इस सृष्टि के रचयिता को
तोड़कर सारे लौकिक बंधन
अपनाया उस परमपिता को
लुटा दिया सर्वस्व उसी पर
सौंप दिया सारा तन, मन, धन
सौ-सौ जन्म करें न्यौछावर
ऐसी परम पुनीता को

मधुबन और शान्तिवन के
कण-कण में समाई है
सेवाधारी भाई-बहनों में
दिखती तेरी परछाई है।
पाकर ज्ञान खजाना प्रभु से
दिव्य गुणों से सजाया जीवन
यह अविनाशी दौलत तुमने
हम बच्चों पर लुटाई है।

दुर्व्यसनों से दूर हुआ

मोहनचन्द्र चौबे, पिथौरागढ़

मेरा जन्म एक प्रतिष्ठित धर्मनिष्ठ परिवार में हुआ है जहाँ नित्य शिव-शक्ति की पूजा और देव-आरती की जाती है। नित्य सालिग्राम पूजन, कर्मकाण्ड और ज्योतिष के आधार पर जीवनयापन करते हुए लौकिक पिताश्री ने मेरी पालना की। बचपन से ही मेरा इन सब चीज़ों में काफी रुझान था। विद्यार्थी काल में सामाजिक परिवेश के दुर्गुण मेरे ऊपर हावी होने लगे और धूम्रपान, पान-तम्बाकू, मांसाहार, मदिरा सेवन, जुआ खेलना आदि सब सीख लिया। बाहरी दुनिया की चकाचौंध और भोगवादी संस्कृति में खुद को ढाल लिया। अनेक बार शराब की लत छोड़ने की कोशिश की परन्तु कुछ समय बाद फिर शुरू कर देता था जिससे मेरी पत्नी और बच्चे परेशान रहा करते थे और घर में आये दिन क्लेश होता था।

मुझे बदलने के प्रयास

अनेकों मन्दिरों और तीर्थों में जाकर मेरी युगल ने मन्नतें मांगीं। तन्त्र-मन्त्र, ज्योतिष और देवताओं का सहारा लेकर कई प्रकार की पूजा करवायी, एक-दो सत्संगों का सहारा लेकर भी मुझे बदलने के प्रयास किये परन्तु इनका प्रभाव मेरे ऊपर अल्पकाल तक ही रहा। इन बुरी आदतों का बुरा असर नौकरी पर भी पड़ा और मुझे गलतियों का दण्ड मिला। इतना सब होते हुए भी मेरी पत्नी ने बहुत ही धैर्य और सहनशीलता बनाये रखी क्योंकि वह मुझे एक अच्छे इन्सान के रूप में देखना चाहती थी।

सीखा कुप्रवृत्तियों पर रोक लगाना

दुर्व्यसनों से घिरे होते हुए भी मैंने अपना संध्या-वंदन, कर्म-काण्डी पूजा तथा भक्ति मार्ग नहीं छोड़ा। एक दिन अचानक मेरी युगल ने सुझाया कि आप ब्रह्माकुमारी आश्रम चलो, जीवन बदल जायेगा। वह मेरे पीछे से सेवाकेन्द्र में सात दिन का कोर्स कर आयी थी। सेवाकेन्द्र पर प्रथम दिन मेरी समझ में कुछ भी नहीं आया। मैंने समझा कि ये जो बता रहे हैं वह तो पहले ही मैंने श्रीमद्भगवद् गीता आदि धार्मिक किताबों में पढ़ा है। दूसरे दिन के पाठ के बाद सेवाकेन्द्र की निमित्त बहन ने मुझे ब्रह्मा बाबा की जीवनी की पुस्तक और एक-दो ज्ञानामृत की प्रतियाँ पढ़ने को दीं जिनसे मेरी अन्तर्दृष्टि खुली और प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की पूरी जानकारी मिली तथा शिवबाबा प्रदत्त आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान प्राप्त हुआ, राजयोग का राज़ समझा। शिवबाबा के करीब आने पर धीरे-धीरे धारणा पक्की होती चली गई और अपनी कुप्रवृत्तियों पर रोक लगाना सीख लिया। बाबा ने अपने वचन 'एक कदम तुम्हारा, हज़ार कदम बाबा के' को सत्य कर दिया। मैं नियमित क्लास करने लगा तथा राजयोग का निरन्तर अभ्यास करने लगा।

तदन्तर समय आया ब्रह्मा बाबा की तपोभूमि के दर्शन करने का। मेरी युगल और मेरी पुत्री साथ में चलने को सहज ही तैयार हो गई। मई, 2011 में मधुबन में आयोजित राजयोग शिविर में भाग लेने का सौभाग्य मिल गया। 'शान्तिवन' पहुँच कर दीन दुनिया से परे अलौकिकता एवं दिव्यता की अनुभूति हुई। पांच दिन के शिविर में बाबा के दिव्य ज्ञान का अमृत पिया। ब्रह्मा बाबा की कर्मभूमि पाण्डव भवन, ॐशान्ति भवन, ज्ञान सरोवर, पीस पार्क आदि स्थानों का भ्रमण कर बाबा की प्रत्यक्षता का अनुभव किया और स्वयं को धन्य किया।

ईश्वर ही मुझे मिल गए

शिवबाबा की कृपा से अब मेरा जीवन अध्यात्म की सीढ़ियाँ चढ़ने लगा है। दुर्व्यसनों से दूर हो चुका हूँ, सात्विक जीवन का आनंद ले रहा हूँ। घर-परिवार पर बाबा की दुआ दृष्टि बराबर बनी हुई है। सेवाकेन्द्र में मुरली श्रवण और मनन से याद की यात्रा का अभ्यास करता हूँ।

(शेष..पृष्ठ 29 पर)

आध्यात्मिकता और भ्रान्तियाँ

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

आधुनिक युग में अध्यात्म के प्रति कई लोगों में, खासकर युवाओं में कई प्रकार की भ्रान्तियाँ हैं। एक भ्रान्ति तो यह है कि जो लोग सांसारिक परिस्थितियों से लड़ नहीं पाए, व्यवसाय या नौकरी में निभा नहीं पाए, परिवार को सम्भाल नहीं पाए या खुद सम्भल नहीं पाए वे ही इस मार्ग पर चले जाते हैं लेकिन यह धारणा पूरी तरह भ्रान्त और बिल्कुल ही गलत है। क्या अध्यात्म में परिस्थितियाँ नहीं आतीं? मानव जहाँ भी रहेगा, परीक्षाएँ तो आएँगी ही। आइये देखें, परीक्षाओं के समय संसार के लोगों की क्या-क्या प्रतिक्रियाएँ होती हैं।

परिस्थिति आने पर शरीर छोड़ना

संसार में बहुत-से लोग हैं जो परिस्थितियों से घबराकर शरीर छोड़ देते हैं अर्थात् आत्महत्या कर लेते हैं। यह हद दर्जे की कायरता और महापाप है। उनकी सोच होती है कि मर जाएंगे तो सभी मुसीबतों से बच जाएंगे पर उन्हें यह ज्ञान नहीं होता कि आत्मा अमर है और वह अपने साथ संस्कारों को ले जाती है। पुनर्जन्म होने पर वैसी ही परिस्थिति फिर सामने आएगी।

परिस्थिति आने पर घर छोड़ना

उनसे जो थोड़े ऊँचे मनोबल वाले हैं वे परिस्थितियों से बचने के लिए शरीर नहीं छोड़ते पर घर छोड़ देते हैं, फर्ज छोड़ देते हैं। स्थान और पहनावा बदल लेते हैं पर मन नहीं बदल पाते। जिस दुख से दुखी होकर घर छोड़ा वो उन्हें अन्दर ही अन्दर सालता रहता है और बदला लेने के लिए उकसाता रहता है।

एक व्यक्ति ने बताया कि उसके कपड़े की दुकान में आग लगी, कर्ज चढ़ गया, न उतार पाने की स्थिति में घर छोड़ दिया। एक अन्य व्यक्ति ने बताया कि सौतेली माँ ने पिता को बहला-फुसलाकर सारी सम्पत्ति अपने बच्चों के नाम करा ली। हम दो भाइयों से भी छोटेपन में कागजों पर हस्ताक्षर करवा लिए। सच्चाई का पता चला तो मन घृणा और प्रतिशोध से भर गया। हम दोनों ने घर छोड़ दिया। तीसरे व्यक्ति ने बताया कि मेरी पत्नी को लोगों ने मेरे विरुद्ध भड़का कर मायके भिजवा दिया, इसी व्यथा में मैं एक भीड़ भरे तीर्थस्थल पर आ बैठा।

जन साधारण में से जब किसी को ऐसी बातें सुनने को मिल जाती हैं तो वे सबके प्रति ऐसी भ्रान्त धारणा बना लेते हैं कि सांसारिक समस्याओं के समाधान न ढूंढ़ सकने वाले सभी लोग घर छोड़ देते हैं। लेकिन यूँ घर छोड़कर भागने और मन में पिछले दुख को उठाए-उठाए फिरते रहने से भला खुद का क्या भला? और जो खुद का भला न कर पाया उससे समाज का क्या भला? इसलिए यह अध्यात्म का पथ नहीं है।

परिस्थितियाँ आने पर व्यसनों की ओर दौड़ना

तीसरी प्रकार के वे लोग हैं जो शरीर में भी बने रहते हैं, घर में भी बने रहते हैं पर समस्याओं का सामना करने के लिए व्यसनों का सहारा लेते हैं। संसार में कितने ही लोग हैं जो बढ़ते खर्च की परेशानियों, बच्चों की मनमानी, पत्नी का असहयोग, भाई-बन्धुओं के धोखे, अपनी शारीरिक-मानसिक असमर्थता आदि के समय घर छोड़कर जंगल में तो नहीं जाते पर ठेके पर तो पहुँच ही जाते हैं। ताश खेलते हैं या अन्य प्रकार के नशों से अपना गम भुलाना या कम करना चाहते हैं। जिन समस्याओं का समाधान मनोबल से करना चाहिए उनका समाधान व्यसनों से करना चाहते हैं और नई-नई समस्याएँ खड़ी कर लेते हैं। एक प्रकार से ये भी आत्मघाती ही हैं क्योंकि आत्महत्या करने वाला धक से मरता है और ये धीमे ज़हर से धीरे-धीरे मरते हैं।

विकारों के धक्के से जीवन की गाड़ी ठेलना

चौथी प्रकार के लोग समस्याओं का समाधान विकारों से करना चाहते हैं। वे बच्चों को सुधारने के लिए क्रोध का

प्रयोग करते, कटु वचन बोलते, धन की कमी पूरी करने के लिए चोरी, शोषण करते, मान-शान बनाए रखने के लिए झूठ बोलते, दिखावा करते, धोखा देते – इस प्रकार प्रतिदिन की गाड़ी को विभिन्न विकारों के धक्के से ठेलते। ये लोग खुद तो आत्महत्या नहीं करते, ना जंगल में जाते पर शान्ति, प्रेम, पवित्रता का गला दबाकर इनकी हत्या कर देते हैं। चरित्र, उदात्त भावना, परोपकार, दया, एकाग्रता, शान्ति, निर्मलता, सादगी, प्रसन्नता आदि सद्गुणों को जंगल में भेज देते हैं और बात-बात में यही कहते हैं, 'मैं जंगल में रहने वाला साधु थोड़े हूँ जो शान्ति, प्रेम की बात करूँ, मैं तो गृहस्थी हूँ, क्रोध, लोभ न करूँ तो गृहस्थी चले कैसे?'

उपरोक्त चार वर्गों के व्यक्तियों में हम किसी को भी सम्पूर्ण नहीं कह सकते। आत्महत्या करना महापाप है, समस्याओं से घबराकर घर से भागना कायरता है, व्यसनों के अधीन होना धीमी आत्महत्या है और विकारों से जीवन की गाड़ी ठेलना अपराध है।

अध्यात्म का मार्ग

इन सबसे ऊँचा पाँचवाँ मार्ग है अध्यात्म का मार्ग जिसमें उपरोक्त चारों ही बुराइयाँ नहीं हैं। हर सच्चा आध्यात्मिक व्यक्ति संसार में रहता है, फर्ज पूरे करता है परन्तु सद्गुणों और सच्चरित्रता के साथ हर्षितचित्त हो संसार में कमलपुष्प-सम जीवन व्यतीत करता है। वह कुछ समय के लिए घर से मन्दिर जाने की बजाय घर को ही शान्ति का मन्दिर, प्रेम का मन्दिर बना लेता है। जैसे चट्टान के सामने आने पर पानी उसके दाएँ या बाएँ या ऊपर या नीचे से बह लेता है, जैसे जूतों से रोंदी जाने पर भी दूब पुन: खड़ी हो जाती है, जैसे आंधी और तूफान आने पर भी लचीले वृक्ष उसके साथ झूलकर अपने को बचा लेते हैं इसी प्रकार शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, पारिवारिक, सामाजिक – किसी भी प्रकार की समस्या आने पर सच्चा आध्यात्मिक व्यक्ति मनोबल और ईश्वरीय बल के आधार पर सामना कर लेता है। बिना स्वास्थ्य और सम्बन्ध बिगाड़े सफल हो जाता है और मुसकराता भी रहता है। अत: यह कोरी भ्रान्ति है कि आध्यात्मिक लोग संसार से भागते हैं। वास्तव में वे संसार से नहीं भागते पर कमजोरियों, कमियों, विकारों और व्यसनों को जीवन से भगा देते हैं।

दूसरी भ्रान्ति

अध्यात्म के बारे में दूसरी भ्रान्ति यह है कि आध्यात्मिक व्यक्ति घर की ज़िम्मेवारियाँ निभाने से मुख मोड़ लेता है। इसलिए किसी कुटुम्बी के ज्ञान-मार्ग पर चलने से अन्य कुटुम्बी चिन्तित हो उठते हैं कि कहीं यह कर्त्तव्य न छोड़ दे, ज़िम्मेवारी न छोड़ दे। वास्तव में यह भय भी निराधार है।

कार्य अर्थ घर से बाहर जाने से घर नहीं छूट जाता

विचार करें, एक बच्चा पढ़ने के लिए स्कूल में आठ घन्टे प्रतिदिन लगाता है तो क्या अपने घर को भूल जाता है, घर को त्याग देता है। पढ़ाई पढ़कर घर तो आना ही पड़ेगा। घर वाली सुविधा तो उसे घर में ही मिलेगी। इसी प्रकार कोई काम के लिए फैक्ट्री जाता, कोई किसी के यहाँ मजदूरी करने जाता, कोई किसी की दुकान पर जाता। इस प्रकार भिन्न-भिन्न धन्धे वाले लोग आठ, दस, बारह, चौदह घन्टे तक भी धन्धे के कारण घर से बाहर रहते तो क्या उनका घर उनसे छूट जाता है? हम सब्जी खरीदने सब्जी मण्डी जाते, दूध लेने डेयरी में जाते, सामान खरीदने बाज़ार जाते, कोई सिलाई, कढ़ाई, बुनाई या अन्य कलाएँ सीखने घर से बाहर जाते तो क्या घर छूट जाता है? आजकल तो पानी घरों में आने लगा है, पहले तो उसे भी दूर से लाना पड़ता था। दवाई लाने, कोई खेल-मनोरंजन देखने, किसी सामाजिक-परिवारिक बैठक में भाग लेने भी जाना पड़ता है तो क्या हम वहीं के हो जाते हैं? घर तो वापस आना ही है। और यदि इनमें से किसी में भी हम भाग ना लें तो क्या सारा दिन सामान की तरह घर में पड़े रहें?

फर्ज त्यागता नहीं, फर्ज का दायरा बढ़ा लेता है

तो जैसे जीवनोपयोगी बहुत-सी चीजें लेने यहाँ-वहाँ जाना होता है इसी प्रकार ईश्वरीय ज्ञान भी एक जीवनोपयोगी चीज है, अति अनिवार्य चीज़ है। उस ज्ञान को सीखने यदि हम घन्टा भर ज्ञान-केन्द्र में जाएँ तो क्या घर छूट

जाएगा? यदि जाएंगे नहीं तो क्या घर बैठे मिलेगा? यदि नहीं लेंगे तो क्या हम ज्ञान से वंचित ही रह जाना पसन्द करेंगे? एक सेना का जवान तो लगातार वर्ष भर भी, सीमा पर तैनात रह सकता है, कई बार तो इससे भी ज्यादा लम्बा समय सेवा में लग जाता है। इसका अर्थ यह थोड़े ही है कि उसने घर छोड़ दिया। उसके मन में अपने परिवारजनों के प्रति असीम प्रेम है और छुट्टी मिलते ही वह सीधा घर जाता है। की हुई कमाई भी उन्हें सौंप देता है और सदा उनका भला सोचता है। वास्तव में तो वह देश और परिवार दोनों की सेवा करता है। इसी प्रकार एक आध्यात्मिक व्यक्ति भी सीमा पर ना सही पर देश के अन्दर फैले दुश्मनों – काम, क्रोध, लोभ, व्यसनों, हिंसा आदि से मानवता की रक्षा में लगा रहता है। फर्ज को त्यागता नहीं बल्कि फर्ज का दायरा बढ़ा लेता है। एक कुटुम्ब की हद की सेवा की बजाय सारे देश और विश्व की सेवा में लग जाता है। इसमें निश्चित रूप से उसके परिवार की भी सेवा समाई है क्योंकि परमार्थ से व्यवहार स्वत: सिद्ध हो जाता है। अत: यह कहना निराधार है कि आध्यात्मिक व्यक्ति फर्ज पूरे नहीं करता। सत्य यह है कि ईश्वरीय ज्ञान से स्वयं का जीवन, परिवार और समाज सुखी, स्वस्थ और समृद्ध बनते हैं, छूटते नहीं।

तीसरी भ्रान्ति

अध्यात्म के बारे में तीसरी भ्रान्त धारणा यह है कि इस मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति तरक्की नहीं कर सकता। आइये, विचार करें, तरक्की का अर्थ क्या है? क्या ऊँचे शिखर पर पहुँच जाना मात्र तरक्की है या वहाँ टिके रहना तरक्की है? निश्चित रूप से हम भौतिक दौड़ लगाकर बहुत कुछ पा लेते हैं पर उस पाए हुए को सहेजे और सम्भाले रखने के लिए आध्यात्मिक बल चाहिए, नहीं तो हम जिस गति से ऊपर पहुँचते हैं उससे भी तीव्र गति से फिसलते भी हैं। एक तरक्कीशील युवा की कहानी सुनते हैं।

क्या यही तरक्की है जो मन का चैन और आयु निगल गई?

वह माता-पिता का इकलौता और मेधावी पुत्र था। पालना और पढ़ाई के लिए माता-पिता अपनी सारी शक्ति झोंककर उसे आगे बढ़ाते रहे। वह भी तरक्की की सीढ़ियाँ चढ़ता रहा। कभी रात जगा, कभी महंगे ट्यूशन लगवाए और पढ़-लिख कर मात्र 25 वर्ष की आयु में एक मशहूर कम्पनी का महाप्रबन्धक बन गया। माता-पिता को अपनी मेहनत का उजूरा मिला, दोस्तों ने खुशियाँ मनाईं। रिश्ते आने लगे। माता-पिता ने अपना बोझ हल्का करने के लिए उसे गृहस्थी की जिम्मेवारी सौंप दी। अब तक तो अकेला दौड़ा था, उसे सिखाया गया था कि अपने नोट्स किसी को दिखाना नहीं, पर अब दौड़ना था कइयों को साथ लेकर, साथ लेना तो सीखा ही नहीं था। अब तक अकेले जीए, अपनी पसन्द की जिन्दगी बिताई पर अब इस स्वतन्त्रता पर अंकुश लगने लगा। कम्पनी के 500 कामगारों का बोझ अकेले पर आन पड़ा। कोई छुट्टियाँ मांगता है, कोई तनख्वा बढ़वाना चाहता है, कोई देर से आता है, कोई कामचोर है, कोई रिश्वत लेता है, कोई लापरवाही करता है, कोई नियमों का उल्लंघन करता है और कोई पीठ पीछे चुगली करता है। प्रतिदिन की इन शिकायतों को सुन-सुनकर सिर चकराने लगता है। कार्यालय की भारी भरकम गाड़ी खींचकर घर लौटता है तो गृहस्थी की गाड़ी खींचनी पड़ती है। कभी पत्नी से स्वभाव नहीं मिलता, कभी पत्नी को उनकी आदतें अच्छी नहीं लगतीं, कभी नाते-रिश्तेदारों से निभाने का दबाव और कभी गृहस्थी की माँगें पूरी करने का तनाव। जाएँ तो जाएँ कहाँ? माता-पिता तो पुत्र को अपने से भी सयाना समझ निश्चिन्त और गौरवान्वित हैं। अध्यात्म तो पुरातन, घिसी-पिटी चीज़ लगती है, अब तो सुकून का एक ही रास्ता बचा है – जाम और व्हीस्की, तम्बाकू और नशीली चीजें। स्कूल-कॉलेज का मेधावी छात्र, परीक्षा में अव्वल आने वाला छात्र जिन्दगी की परीक्षा में व्यसनों के आगे घुटने टेक रहा है। उसका मन तो तनाव से खोखला हो रहा है और तन व्यसनों से छलनी। तीस साल में पहला अटैक, पैन्तीस साल में दूसरा अटैक और चालीस में तीसरा अटैक आते ही राम नाम सत्य हो जाता है। क्या यही तरक्की है जो मन के चैन को और तन की आयु को निगल गई।

(क्रमश:)

सर्जनों का सर्जन बाबा

डॉ.जनक सिंह, रामपुर मनिहारन, सहारनपुर (उ.प्र.)

आज से 20 वर्ष पहले जब आबू पर्वत की पावन भूमि ब्रह्माकुमारीज़ परिसर पर कदम रखा तो लगा कि स्वर्ग में आ गये हैं। वहाँ करीब एक सप्ताह रहे, न खाने की चिन्ता, न काम की और न घर की। किसी प्रकार की कोई दिक्कत ही नहीं थी। भाई-बहनों का व्यवहार बहुत मधुर व सुन्दर तथा चेहरे सदा खिले रहते थे। कभी उनके चेहरों पर उदासी या चिन्ता नहीं देखी। मैं सोच में पड़ गया कि ऐसी कौन-सी शक्ति है जो इन भाई-बहनों को हमेशा खुश रखती है।

सोए-सोए मिली चेतावनी

एक सप्ताह के बाद हम ट्रेन से घर वापिस लौटने लगे। खाना खाने के बाद ट्रेन में अपनी सीट पर सोया तो अचानक मेरे कानों में आवाज़ आई, बच्चे, घर जाकर अपने बाप को भूल तो नहीं जाओगे, दो-तीन बार ऐसी आवाज़ आई। आँखें खुली तो देखा, रात के दो बजे थे। सभी सो रहे थे। सोचने लगा, आखिर कौन था जो बार-बार चेतावनी-सी दे रहा था। घर आने के बाद एक रात अचानक आँखें खुलीं, लाइट नहीं थी। मैंने देखा, तारे जैसी एक लाइट कभी इस कोने से, कभी उस कोने से आ रही थी। मैंने पत्नी को उठाया और उस रोशनी के बारे में बताया। वे कहने लगी, आपका वहम है, ऐसा कुछ नहीं है। फिर नींद नहीं आई और सोचता रहा कि कौन लाइट चमका रहा था। अगली सुबह आश्रम पर गये, बहन जी को सारी बात सुनायी। बहन जी ने एक सप्ताह का कोर्स प्रारम्भ कर दिया और हम ज्ञान-मार्ग पर चल पड़े।

खर्चा सुन मन रो पड़ा

मई, 2013 में एक रात अचानक कंधों के बीचों-बीच दर्द महसूस हुआ। घबराहट और दर्द के मारे बुरा हाल हो गया। मैं समझ गया कि हृदय का दर्द है क्योंकि मैं भी एक डॉक्टर हूँ। दर्द की कुछ दवाई ली और पत्नी को बताया। उन्होंने उसी समय बहन जी को फोन किया और उनसे सलाह ली। फिर बाबा का ध्यान किया और कुछ ही देर में आराम मिलना शुरू हो गया। अगले दिन सुबह हृदय

के डॉक्टर ने कुछ टैस्ट किए और कहा, आपको दिल्ली या किसी बड़े शहर में जाना पड़ेगा, 3-4 लाख रुपये का खर्चा होगा। डॉक्टर साहब ने मेरा इको टैस्ट भी कराया। हृदय की पम्पिंग 20 प्रतिशत थी। मन रो पड़ा, कहने लगा, बाबा, मैं 3-4 लाख रुपये कहाँ से लाऊँगा। एक छोटा-सा डॉक्टर, 20-30 रुपये की दवाई देने वाला, उसके पास 3-4 लाख कहाँ से आयेंगे? सब रिपोर्ट लेकर हम बहन जी से मिले, उन्होंने हमारा प्रोग्राम मधुबन जाने का बना दिया।

रिपोर्ट सौंप दी बाबा को

हम बुझे मन से मधुबन के लिए चल दिए। हमारे साथ आश्रम की एक बहन भी चली। कमज़ोरी इतनी थी कि मैं चल भी नहीं सकता था, थोड़ा चलने पर सांस फूल जाती थी। हम वहाँ जाकर डॉक्टर सतीश गुप्ता जी से मिले। उन्होंने सब रिपोर्ट देखकर हमारा हौसला बढ़ाया, राजयोग करना बताया और एक गोली Cardace 5mg की रोज़ लेनी बताई। डॉक्टर साहब से मिलकर हम बाबा के रूम में आ गये। बाबा के सामने आँसू आ गये और बाबा को कहा, बाबा, मैं 3-4 लाख रुपये कहाँ से लाऊँगा, दुकान की इतनी कमाई नहीं है, बाबा, आप तो सर्जनों के सर्जन हैं, आप ही इलाज करेंगे। जो मेडिकल रिपोर्ट थी वो बाबा को सौंपकर (बाबा के सामने रखकर) हम वापिस घर आ गये। तब से

अब तक Cardase 5% की एक गोली रोज ले रहा हूँ।

अब पहले की तरह फिट हूँ

वर्ष 2014, जनवरी माह में बाबा से मिलन मनाया। इससे पहले पुन: अपनी मैडिकल रिपोर्ट करायी थी। उसे लेकर डॉक्टर सतीश गुप्ता जी से मिला, उन्हें बहुत खुशी मिली क्योंकि 7-8 महीने पहले मेरे हार्ट की जो पम्पिंग 20 प्रतिशत थी अब 40 प्रतिशत हो गयी थी। वाह! बाबा वाह! आपने तो कमाल का आपरेशन कर दिया। अब मैं पहले की तरह चलता-फिरता हूँ, खाने में कोई भी दिक्कत नहीं है। सुबह घूमने के लिए 2-3 कि.मी. जाता हूँ, सब कुछ ठीक कर दिया बाबा ने। बाबा, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। अब मैं पहले की तरह फिट हूँ और बाबा की कृपा से अपने बच्चों के बीच में हूँ।

मैं निमित्त टीचर बहन को धन्यवाद देता हूँ, उन्होंने हमारा मार्गदर्शन किया, समय-समय पर सुख-दुख में हमारा साथ दिया। मैं अपनी पत्नी सुनीता का भी शुक्रिया करता हूँ, उन्होंने मुझे बाबा की श्रीमत पर चलने के लिए प्रोत्साहित किया। कभी-कभी बाबा की बातों को लेकर उन पर गुस्सा हो जाता था लेकिन उन्होंने हमेशा मेरा हौसला बढ़ाया और साथ दिया। ❖

रंक से राव बनाया बाबा ने

ब्रह्माकुमारी नलिनी उराडे, वर्धा (नागपुर)

जब से ईश्वरीय ज्ञान का सात दिन का कोर्स किया तब से ज्ञान से ऐसी प्रीत लगी कि एक दिन भी मुरली सुनना नहीं छोड़ा। लौकिक पति की तरफ से परीक्षाएँ तभी से आनी शुरू हो गईं जब से मैंने सेवाकेन्द्र पर जाना प्रारंभ किया। उन्होंने कहा, तुम ज्ञानमार्ग छोड़ दोगी तभी मैं घर चलाने के लिए पैसे दूँगा। धमकी दी कि तुम वहाँ जाना बंद करो, नहीं तो मैं घर छोड़कर चला जाऊँगा परंतु मैं उनकी धमकी से डरी नहीं। मेरे मन में हमेशा यही बात रहती थी कि मैं शिवबाबा की छत्रछाया में हूँ, तो फिर डरने की क्या बात है? मैंने सब बातें बाबा को सौंप दी। पति अपनी ज़िद्द पर अड़े रहे, सहयोग देना बन्द कर दिया। फिर क्या? मैंने एक छोटे-से बिजनेस से बच्चों को पाला-पोसा और सर्विस करने लायक बना दिया। सेवाकेन्द्र की निमित्त बहन जी ने मुझे बहुत मदद की। वो मुझे हमेशा हिम्मत देती रही। बहुत कष्ट सहन करके मैंने बच्चों को पढ़ाया। आज सभी बच्चे अच्छे पदों पर नौकरी कर रहे हैं। लड़की भी ग्राम सेविका के पद पर सर्विस कर रही है। मेरे पति ने मुझे इतना सताया कि एक बार मेरा गला दबाकर मारने की कोशिश की थी। ऐसे ही दूसरी बार जला देने की भी कोशिश की परंतु कहते हैं, 'जाको राखे साईंया मार सके न कोई।'

अब मेरे दुख के दिन समाप्त हुए क्योंकि अब बच्चे बड़े हो गए तो पति को उनसे डरना पड़ता है। अब बाबा ने घर को धन-धान्य से इतना भरपूर कर दिया है कि किसी बात की कोई कमी नहीं है। सबसे खुशी की बात यह है कि पति में 70 प्रतिशत सुधार हो चुका है। बाबा का कोटि-कोटि धन्यवाद करती हूँ। मेरे जैसा पद्मापद्म भाग्यशाली कोई नहीं, ऐसा मेरा दिल गा रहा है। ❖

शिवबाबा और ब्रह्माबाबा ने पहचाना नारी की शक्ति को

सुमन मंजरी, हरियाणा पुलिस महानिरीक्षिका, मधुबन (करनाल)

26 से 30 जून, 2015 तक ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत) में आयोजित
'समाज परिवर्तन में नारी की भूमिका'
विषयक महिला सम्मेलन में दिया गया उद्‌बोधन

जब मैं पहली बार ब्रह्माकुमारी बहनों के सम्बन्ध-सम्पर्क में आई तो सम्बन्ध-सम्पर्क में आने का कारण बड़ा कड़वा था। मैं उस समय पानीपत में एस.पी.थी, पानीपत में चर्च में रहने वाली एक नन पर हमला हो गया था। वो हमला शारीरिक शोषण का था और तब विषय आया कि उन स्थानों की तलाश की जाए जहाँ बहनें रहती हैं। उसके बाद हमारी नज़र ब्रह्माकुमारियों पर पड़ी। पर समाज में जिससे भी बात की उससे विरोधी उत्तर मिला कि मैडम कहाँ जा रही हो, ये ब्रह्माकुमारियाँ तो सफेद साड़ी पहनती हैं, बड़ी खुफिया-सी हैं, भाई-बहन बना देती हैं और अकेली चलती रहती हैं।

सफेद कपड़ों के साथ रसमलाई

लेकिन वर्दी की एक ज़िम्मेवारी थी। मैंने कहा, सुरक्षा तो देनी ही है, कल को मेरे इलाके में कुछ हो गया तो मुझ पर बन पड़ेगी। इसके बाद सत्य का बोध ना होने के कारण मैं और उलझती चली गई। मुझे पता पड़ा कि यहाँ तो भाई भी जाते हैं। मैं वहाँ गई, हिन्दू विवाहिता होने के कारण सफेद कपड़ों से बहुत घबराती हूँ। समाज की मान्यता के अनुरूप सफेद कपड़ा एक नारी के मन में खौफ पैदा करता है। वो प्रार्थना करती है कि हे प्रभु, मुझे ऐसा जीवन मत देना जो विवाहिता होते हुए भी सफेद कपड़े पहनने पड़ें। मैंने सोचा, इन बहनों में तो बहुत वैराग्य है, किसी तरह की कोई उमंग, कोई ऊर्जा होगी नहीं। जब अन्दर गई तो इन्होंने मुझे ड्राइंग रूम में बैठाया और कहा कि मैडम, खाना खाकर जाना। खाना देकर जब बहन बाहर गई तो मैंने मेरे सहयोगी को कहा कि कमाल है, ये केवल सफेद कपड़े ही नहीं पहनती, अन्दर रसमलाई भी खाती हैं। मेरी विचारधारा थी कि कपड़े सफेद पहने हैं तो जीवन में बिल्कुल ही वैराग्य और निराशा आनी चाहिए।

मैं चाहती हूँ हर नारी दुर्गा बने

भोजन करने के बाद ब्रह्माकुमारी बहनों ने मुझे कहा कि हॉल में कुछ चित्र लगे हुए हैं उनका राउन्ड लीजिए। उन्होंने मुझे कई चित्र दिखाए और अन्त में आठ शक्तियों का चित्र दिखाया जिसमें सहन करने की शक्ति, सामना करने की शक्ति आदि शक्तियों का वर्णन था। मैंने पूछा, ये क्या हैं? उन्होंने कहा कि राजयोग से ये शक्तियाँ जागृत हो जाएँगी। मैंने कहा कि ये शक्तियाँ तो हर नारी में जागृत हैं। उन्होंने पूछा, कैसे? मैंने कहा, रोज़ पति शराब पीकर आता है, मारता है और वह सहन करती है। वह परस्त्री से इश्क करता है और वह उसका भी सामना करती है, महिलाओं में ये सारे गुण हैं। इसके बाद मुझे आगे ले गई और एक फोटो दिखाया, कहा, मैडम, ऐसा बनना है। मैंने पूछा, कौन हैं ये? उन्होंने कहा, श्री लक्ष्मी व श्री नारायण हैं, आपको नारी से श्री लक्ष्मी बनना है। मैंने कहा, मैं तो कभी नहीं आऊँगी ऐसे स्थान पर, मैं तो चाहती हूँ कि हर लड़की दुर्गा बने ताकि वह समाज का मुकाबला करे और आप कह रहे हैं, लक्ष्मी बनाएँगे। धन के लालच में समाज स्त्री को इतना नीचे ले आया है इसलिए मुझे लक्ष्मी नहीं बनना, मैं वहाँ से

वापिस लौट आई।

अहंकार वापस लेकर आऊँगी

कुछ दिनों बाद रक्षा-बन्धन पर्व आया और ये बहनें राखी बाँधने आईं। मैंने मन में सोचा, कोई लड़कियों को राखी बांधता है क्या? भाई को राखी बांधी जाती है, मैं तो महिला हूँ, इनको इतना भी ज्ञान नहीं? फिर सोचा, पहली बार आई हैं, हर बार तो आएँगी नहीं। अपने रीडर को कहा, एक हज़ार रुपये लेकर आओ, इन बहनों को देने हैं। मुझे यही ज्ञान था कि राखी बांधेगी तो पैसे देने हैं। इतने में बहनें बोलीं, जी, हम पैसे नहीं लेंगे। मैंने पूछा, फिर क्या लेंगे? कहने लगी, जी, आप कोई भी एक अपना दुर्गुण दे दो। मैंने पूछा, कैसे दुर्गुण? वे बोलीं, यदि आप में क्रोध है तो वो दे दो। मैंने कहा, वो तो मैं बिल्कुल भी ना दूँ, यदि मेरे में क्रोध ही समाप्त हो गया तो कैसे मैं पिटाई करूँगी, कैसे लोगों को काबू करूँगी, कुछ और माँगो तुम। फिर बहनों ने कहा, लोभ, मोह, काम, अहंकार – इनमें से कोई भी दे दो। मैंने कहा, तुम मेरा अहंकार ले जाओ, और चीज़ें तो मुझे अभी चाहिएँ नौकरी के साथ। उनके जाने के बाद मैंने चर्चा की और मुझे लगा कि अहंकार देने के बाद अब मैं पद का क्या अहंकार करूँ? बहनों ने जाते हुए कहा था कि बाबा ने कहा है कि जो चीज़ दे दी जाती है उसे वापिस नहीं लेते। मुझे चिंता हो गई कि अब तो मैं फंस गई। मैंने सुना हुआ था कि परमात्मा से वायदा करके उसे तोड़ डालो तो बहुत सज़ा हो जाती है। फिर मैंने सोचा कि शाम को इनके यहाँ जाऊँगी और बातों-बातों में अपना अहंकार वापिस लेकर आऊँगी। फिर मैं शाम को सेवाकेन्द्र पर गई। इन्होंने मुझे ब्रह्मा बाबा का फोटो दिखाया। उनका जीवन परिचय दिया। फिर दादी प्रकाशमणि का फोटो दिखाया, उनका जीवन परिचय दिया। मैंने पूछा, वो कितनी पढ़ी थी? उन्होंने कहा, मैट्रिक पढ़ी हुई थी। मैंने कहा, केवल इतनी पढ़ी हुई, इतनी बड़ी संस्था को चलाए, संभव ही नहीं है। उस बात ने मुझे सोचने पर विवश किया और मैं ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय में आ गई। इसलिए कि ब्रह्मा बाबा के माध्यम से शिव बाबा को सलाम भेज सकूँ जिसने नारी शक्ति को पहचाना जिसे समाज नहीं पहचान पाया, जिसे पिता नहीं पहचान पाया। इससे अधिक हैरानी तो मुझे तब हुई जब मैंने पीस ऑफ माइंड चैनल पर सुना कि सिंध-हैदराबाद में संस्था के प्रारंभिक स्वरूप ओम मण्डली में एक बहन थी, जो बस चलाया करती थी। उस समय बाबा ने नारी शक्ति को कितना सही-सही पहचाना।

एक जला हुआ दीपक जला सकता है हज़ारों को

इसके बाद मैंने ब्रह्माकुमारियों को अच्छी तरह से जान लिया। जब 16 दिसम्बर, 2013 को दिल्ली में निर्भया काण्ड हुआ तब मेरे मन में आया, काश! निर्भया के पास परखने की शक्ति होती और वो उस बस में न चढ़ती लेकिन मुझे काश भी नहीं कहना है। मुझे शुभ भावना रखनी है और मनसा सेवा के द्वारा अपनी शक्तियाँ दूसरों को देनी हैं। जब मनुष्यों के भ्रम टूटते हैं तब परिवर्तन की शुरूआत होती है। मैं कभी नहीं समझी कि कलियुग व सतयुग में क्या अन्तर है पर अब समझ गई। जब मैं माउण्ट आबू की गलियों में घूम रही थी तो बाज़ार से कुछ सामान खरीदा। मेरे पास एक 11 साल का बच्चा भी खड़ा था, वह भी सामान खरीद रहा था। उसने 200 रुपये दिये और 170 रुपये का सामान खरीदा पर दुकानदार ने 10 रुपये ही वापिस दिये। मैंने सोचा, बाबा जो कह रहे हैं वो यहीं दिख गया। मुझे तीन साल बाद रिटायर्ड होना है, मुझे लगने लगा था कि अब ना तो वो ऊर्जा रही है और ना ही वो शक्ति। मैं समाज में देख रही हूँ, माँ अपने छोटे बच्चे को बेच रही है और पिता, माता के ही सामने छोटी बच्ची से दुर्व्यवहार कर रहा है। यह देखकर मैं बिल्कुल ही बुझ गई थी कि यह समाज नहीं बदलेगा। ऐसे में मुझे एक आशा की किरण दिखाई दी ब्रह्माकुमारियों का

केन्द्र और इसके सम्पर्क में आने से मुझमें शक्ति जागृत होने लगी। अब मैं कह सकती हूँ कि हज़ार बुझे हुए दीपक एक दीपक को नहीं जला सकते पर एक जला हुआ दीपक हज़ार बुझे हुए दीपकों को जला सकता है।

बाबा ने जगा दिया शक्तियों को

कल चक्रधारी बहन ने कहा, हमने आपको नहीं बुलाया है, बाबा ने बुलाया है। बाबा मेरे पिता हैं, मैं उनसे सम्बन्ध जोड़कर इतनी शक्ति प्राप्त करूँगी कि मैं भी बाप समान बन सकूँ और औरों को भी बाप समान बना सकूँ। बेटियाँ जब बाप के घर आती हैं तो खाली हाथ नहीं जातीं, मैं भी यहाँ से भरपूर होकर जाऊँगी। हम सब उस हनुमान की तरह हैं जिसे मालूम ही नहीं था कि तुम सूरज को निगल सकते हो। जैसे ही उसको बताया गया, उसकी शक्ति जाग गई। हम भी अपने आप को बहुत कमज़ोर मान रहे थे लेकिन बाबा ने हमारी शक्तियों को जगा दिया। इसका मैं आपको एक उदाहरण देती हूँ। जिस दिन मुझे यहाँ आना था उस दिन हमारे विभाग में दौड़ का आयोजन किया गया था। मैंने कहा, मैं दौड़ में भाग नहीं लूंगी। पहले मैं भाग लिया करती थी, प्रथम आया करती थी लेकिन अब थोड़ी सेहत अच्छी हो गई है इसलिए मैंने मना कर दिया था लेकिन मेरे वरिष्ठ अधिकारी का आदेश आया कि मैडम आपको 200 मीटर दौड़ना है। मुझे लगा कि मैं तो सबसे पीछे ही रहूँगी। मैंने आँखें बंद कर ली और कहा, बाबा मैं नहीं दौड़ रही हूँ, आप दौड़ रहे हो। मैं रुकी नहीं और द्वितीय स्थान प्राप्त कर लिया। मुझे बाबा से जो शक्ति व साहस मिला है उसका धन्यवाद करने आई हूँ। आज आपको यहाँ से यह प्रण करके जाना है कि हम ना किसी भी प्रकार का शोषण सहन करेंगे, ना स्वयं किसी का शोषण करेंगे। इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि स्वच्छंदता व उद्दंडता नारी में नहीं होनी चाहिए। स्वतंत्रता और शक्ति ज़रूरी है, उद्दंडता व अभद्रता नहीं चाहिए। ❖

बेटी बचाइये...बेटी पढ़ाइये

ब्रह्माकुमार राकेश कुमार शर्मा, भरतपुर (राजस्थान)

सोई है 'अन्तरात्मा' उसको जगाइये।
बेटी बचाइये, सभी बेटी पढ़ाइये।।

आती हैं जन्म लेने को ये दिव्य आत्मा।
भ्रूणों के रूप में ही कर देते हैं खात्मा।।
एक दिव्य ज्योति को न तुम ऐसे बुझाइये।
बेटी बचाइये, सभी बेटी पढ़ाइये।।

अज्ञानता ही तो सभी दुखों का मूल है।
अनपढ़ रहे बेटी, हमारी भारी भूल है।।
दो-दो कुलों की लाज को 'शिक्षित' बनाइये।
बेटी बचाइये, सभी बेटी पढ़ाइये।।

भोली बहुत हैं, शान्ति से रहती हैं बेटियाँ।
अपनों से भेदभाव भी सहती हैं बेटियाँ।
मन-बुद्धि और संस्कार सब निर्मल बनाइये।
बेटी बचाइये, सभी बेटी पढ़ाइये।।

बेटों के वास्ते तुमने क्या-क्या नहीं किया?
फूलों-सी बेटियों को ही हक उनका नहीं दिया।।
'बेटी पराया धन' इसे गौरव दिलाइये।
बेटी बचाइये, सभी बेटी पढ़ाइये।।

भारत है 'मातृ-भूमि' और परचम हैं बेटियाँ।
बेटों से किस बात में कमतर हैं बेटियाँ?
अपनी मनोवृत्ति को कुछ बेहतर बनाइये।
बेटी बचाइये, सभी बेटी पढ़ाइये।।

साहस और त्याग में हैं सदा वीर बेटियाँ।
सत्य, प्रेम, न्याय की तस्वीर हैं बेटियाँ।।
इस 'शक्ति के अवतार' को मस्तक झुकाइये।
बेटी बचाइये, सभी बेटी पढ़ाइये।।

रूहानी दुनिया का साक्षात्कार

ब्रह्माकुमार बिजेन्द्र कुमार अग्रवाल, टनकपुर (उत्तराखंड)

परमात्मा पिता की साकार में अपनी अलग दुनिया है जहाँ कोई लड़ाई-झगड़ा नहीं, कोई छोटा-बड़ा नहीं, कोई ऊँच-नीच का भेद नहीं, किसी को किसी से कोई शिकायत नहीं, वह है शान्तिवन। शान्तिवन आने से पहले यहाँ के बारे में ख्याल बिल्कुल जुदा थे। हमारा सर्वप्रथम पदार्पण शान्तिवन के यातायात विभाग में हुआ। हमें मनमोहिनी काम्प्लैक्स में त्रिलोक में कमरा मिला। कमरे तक का बस से सफर इस दुनिया का सबसे यादगार सफर रहा। ड्राइवर का प्यार से भाई कहकर पूछना कि कहाँ कमरा मिला है, हमारी बस का आगे बढ़ना, सुबह 3.30 बजे का अमृतवेले का समय, सामने देखा तो लगा, मैं बस में नहीं, पुष्पक विमान में बैठा हूँ। सड़क के दोनों तरफ लाइन से, सफेद वस्त्रों में लिपटे देवी-देवता (फरिश्ते) चले आ रहे थे। हर तरफ सफेद ही सफेद। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि स्वर्ग से देवियाँ एवं देवता उतरकर किसी विशेष अनुष्ठान हेतु, बिना कोई शोर किए, अपनी धुन में मस्त डायमंड हाल की ओर चले जा रहे हैं। मुझे एक बार तो ऐसा लगा कि मैं धरती पर हूँ या मुझे ब्रह्मा बाबा ने कुछ समय के लिए सूक्ष्मवतन में बुला लिया है!

ज्ञान-मुरली की तान पर हुआ बेसुध

बस का मनमोहिनी परिसर में प्रवेश मेरे लिए दूसरे आश्चर्य से कम नहीं था। सोचा था कि धर्मशाला जैसी जगह होगी। छोटे-छोटे कमरे होंगे, कमरों में दरियाँ या गद्दे बिछे होंगे। एक कमरे में आठ-दस लोगों के रहने की व्यवस्था होगी। एक लाइन में अलग से सुविधाएँ होंगी परन्तु सब कुछ विपरीत मिला। बैग को हाथ में लिए धीरे-धीरे आगे बढ़ा, एक तरफ स्टूडियो, ब्रह्मलोक, झूले में झूलते बच्चे, दूसरी तरफ स्वर्णिम प्रभात, दिव्यलोक, बैकुण्ठ, त्रिलोक, बाबा का कमरा। ये सब कौतूहल के दृश्य थे। कमरे में पहुँचकर, तैयार होकर, दूसरे भाई के साथ ऐसे चला जैसे बच्चा अपने बाप के हाथ की उंगलियों को पकड़ कर नई जगह पर जाता हो। मैं पतंग की डोर के समान अपने आप खिंचा हुआ डायमंड हाल की तरफ मुरली सुनने के लिए बढ़ रहा था। सुंदर-सुंदर दृश्य नयनों को चन्द्रमा-सी शीतलता दे रहे थे। डायमंड हाल में मुझे ऐसा लग रहा था कि मेरा मोहन मुरली बजा रहा है और मैं मोहन की राधा बन मुरली की तान पर बेसुध हो रहा हूँ। मुझे लग रहा था कि मेरे कदम थिरकने लगेंगे और मैं नाचने लगूंगा।

प्रथम बार मधुबन में आना मेरे लिए अनेक अनुभवों से भरा हुआ सिद्ध हुआ। मैं अपने अब तक के सभी अनुभवों को लिखने बैठ गया तो शायद लेखनी की स्याही खत्म हो जाये या इस पुस्तक के पन्ने कम पड़ जायें। धन्य है यह छोटी-सी रूह जिसे साक्षात् रूहानी दुनिया देखने का बाबा ने सुअवसर दिया। मुझे लगा, यहाँ के फरिश्तों ने इस रूह को भी फरिश्ता बना दिया है। वाह बाबा वाह! ❖

जरूरी सूचना

Connect One Software के लिए 4 Software developers की आवश्यकता है, जो 2 वर्ष से बी.के. हों, 6 मास या अधिक समय शांतिवन, आबू रोड में रह सकते हों, आवश्यक खर्चा दिया जायेगा।

सम्पर्क करें : बी.के. ललित भाई (09413373440)

ई-मेल: trimurtishiva@gmail.com

वैश्विक प्रेम के प्रतीक **'रक्षाबंधन पर्व'** तथा सतयुगी दुनिया के महाराजकुमार श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव **'जन्माष्टमी'** पर्व की पाठकगण को कोटि-कोटि बधाइयाँ

बाबा ने बचाई हम सबकी जान

ब्रह्माकुमारी सुनिता, जीवन पार्क, दिल्ली

मैं पिछले 17 साल से ईश्वरीय ज्ञान में चल रही हूँ। बचपन से ही मन में जिज्ञासा थी कि भगवान कौन हैं, कहाँ हैं, हैं भी या नहीं, अगर हैं तो सामने क्यों नहीं आते? ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ते ही इन सारे प्रश्नों के उत्तर मिल गए। प्यारे बाबा ने समय-समय पर अनेक चमत्कार दिखाकर हमेशा और हर परिस्थिति में साथ दिया है, हर परेशानी से बचाया है। एक आश्चर्यजनक घटना का उल्लेख कर रही हूँ।

हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझो

मेरे युगल ने 13 जनवरी, 2014 को शरीर छोड़ा। गृह शुद्धि के लिए हवन तथा ब्राह्मणों का भोजन 27 जनवरी को होना था। घटना 26 जनवरी, रात 11 बजे की है। बड़ा चूल्हा गैस सिलैन्डर के साथ जोड़ करके जैसे ही जलाया, गैस सिलैन्डर की रबड़ निकल गई और सिलैन्डर में आग लग गई। ऊँची-ऊँची लपटें उठने लगीं। दो बच्चों समेत नौ लोग कमरे में थे और कमरे के दरवाज़े के आगे जलता हुआ सिलैन्डर था। बाहर निकलने के लिए अन्य रास्ता भी नहीं था। हमको लगा कि अब हम सबका अन्त आ गया है। सब घबरा रहे थे, अन्दर बच्चे रो रहे थे। तभी मुझे प्यारे बाबा के महावाक्य याद आए, 'हर घड़ी को अंतिम घड़ी समझो' और यह भी कि 'अंत में एक बाप के सिवाय और कोई की याद न आए'। मैं शिवबाबा को पुकारने लगी तथा बच्चों से और सबसे कहा कि बाबा को याद करो ताकि अन्तिम घड़ी में बाबा की याद में शरीर छोड़ें तो अंत मति सो गति हो जाएगी।

सभी व्यक्ति सुरक्षित

हम सेकण्ड फ्लोर पर रहते हैं। इतने में मीठे बाबा ने पड़ोसी को प्रेरणा दी। वह जलता हुआ सिलैन्डर पकड़कर फर्स्ट फ्लोर पर ले गया और सब मोहल्ले वालों ने अपने-

अपने घरों से पाइप निकालकर उस पर खूब पानी डाला। फायर ब्रिगेड भी आ गई, पुलिस भी आ गई। तब तक सिलैन्डर खाली होकर बुझ चुका था। घर के दरवाज़े जल गए, रस्सी पर पड़े कपड़े जल गए, गमलों में लगे पौधे सब झुलस गए पर किसी व्यक्ति पर आग का कोई असर नहीं हुआ। इस प्रकार प्यारे बाबा ने हम सबकी जान बचाई। सभी लोग आश्चर्यचकित रह गए और कहने लगे कि आप सब बहुत भाग्यशाली हो जो भगवान ने आपको बचा लिया वरना इतनी भयंकर आग लगने के बाद तो सिलैन्डर फट ही जाता है।

बाबा ने हम सबको नव-जीवन दिया। नव-जीवन देने वाले, सच्ची खुशियाँ देने वाले बाबा का कितना भी धन्यवाद करें, कम है। दिल से निकलता है,

हजारों धन्यवाद हैं ओ मेरे बाबा,
दिल करता तुमको याद है ओ मेरे बाबा।

दुर्व्यसनों से ...पृष्ठ 18 का शेष

ज्ञानामृत, ज्ञानवीणा और ओमशान्ति मीडिया जैसे पुनीत साहित्य से अपने को आध्यात्मिक ज्ञान में अपडेट करता हूँ। बाबा के दिव्य गीतों को सुनने और सुनाने का आनन्द लेता हूँ, एक-दो को बाबा का परिचय देने का अल्प प्रयास भी करता हूँ। इस तरह जब मैं ईश्वर से मांग रहा था तो कुछ भी नहीं मिला लेकिन अब तो ईश्वर (बाबा) ही मुझे मिल गये हैं तो मांगने की दरकार ही नहीं। वाह मेरा बाबा वाह!

अनुभवों का सागर समाने वाली गागर

विश्वनाथ साहनी, एडवोकेट, साकेत नगर, भोपाल

''ज्ञानामृत'' पत्रिका उस गागर के समान है जिसमें ज्ञान रूपी अमृत का पूरा सागर समाया हुआ है। इसके सभी लेख सारगर्भित, प्रेरणादायक और जीवन को परिवर्तित करने वाले होते हैं। पत्रिका के माध्यम से मैंने बहुत-से लोगों के जीवन में काफी बदलाव होते देखा है।

मन में उठते थे कई प्रश्न

मैं इस संस्था एवं पत्रिका के सम्पर्क में सन् 1981 में एक योग शिविर के माध्यम से आया। इससे पूर्व भी कुछ धार्मिक एवं आध्यात्मिक संस्थाओं से जुड़ा हुआ था। मन में कई प्रश्न उठते रहते थे, उनका समाधान खोजता था लेकिन प्राप्त होने वाले उत्तर मेरी जिज्ञासा को कभी शान्त नहीं कर पाते थे। कई बार मैं सोचा करता था कि दुनिया में मैं और मेरे जैसे अनेक इंसान हैं जो ईमानदारी एवं सच्चाई से अपना एवं अपने परिवार का जीवन चला रहे हैं लेकिन यह क्या बात है कि अधिकतर मुसीबतें और समस्यायें भी उन्हीं के हिस्से में आती हैं। दूसरी ओर वे लोग हैं जो बेईमानी, झूठ, भ्रष्टाचार और अनैतिक तरीकों से धन अर्जित कर रहे हैं। वे ए.सी.गाड़ियों और ए.सी.बंगलों में रह कर मौज-मस्ती का जीवन बिता रहे हैं। यह विचार भी आता था कि कोई व्यक्ति किसी मकान की पाँचवीं मंजिल से गिरता है लेकिन उसे खरोंच तक नहीं लगती और कोई-कोई की बाथरूम में पैर फिसलने मात्र से हड्डी टूट जाती है, महीनों अस्पताल में पड़ा रहता है, आखिर ऐसा क्यों? दुखद घटना घटित हो जाने पर अधिकतर मामलों में यह सुनता था कि ईश्वर ने ऐसा क्यों कर दिया पर मेरी मान्यता रही कि ईश्वर सुखकर्त्ता, दुखहर्त्ता हैं, हमारे परमपिता हैं, लौकिक पिता भी बच्चे को दुखी होते नहीं देख सकता तो फिर वे दुख कैसे देंगे?

मार्गदर्शक बने मुरली और ज्ञानामृत

सन् 1983 में मुझे इस संस्था के अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय आबू पर्वत (मधुबन) जाने का सौभाग्य मिला जहाँ का

वातावरण मेरी कल्पना शक्ति से परे की बात है। कुछ पलों के लिए तो ऐसा लगा जैसे मैं साकार दुनिया में न होकर एक अकल्पनीय दुनिया में विचरण कर रहा हूँ। वहाँ मैंने दैवी भ्राता निर्वैर जी से समय लेकर अपने प्रश्नों के समाधान के सम्बन्ध में चर्चा की। बाबा की कुटिया के सामने बड़ी ही आत्मीयता से उन्होंने मेरा मार्गदर्शन किया और अन्त में मुझे कहा, ''बहुत-सी बातें चाहे अभी आपकी समझ में न भी आयें लेकिन जब ज्ञान का गहराई से मनन-चिन्तन करेंगे और अनुभवी भाई-बहनों के सम्पर्क में आयेंगे तो समयानुसार सब कुछ स्वत: ही स्पष्ट होता जायेगा।'' कालान्तर में मैंने ईश्वरीय ज्ञान का गहराई से मनन-चिन्तन करना शुरू किया तो हर प्रश्न का उत्तर स्वत: ही मिलता गया। इसके लिए मार्गदर्शक बने ईश्वरीय महावाक्य (मुरली) और ज्ञानामृत में प्रकाशित अमूल्य अनुभवों से भरे लेख।

एक नम्र विनती

आज पूरे विश्व में तनाव, ईर्ष्या, द्वेष, तिरस्कार, अविश्वास, संघर्ष, अशान्ति तथा मानवीय मूल्यों में गिरावट का वातावरण बना हुआ है। इसमें ज्ञानामृत पत्रिका निश्चित रूप से मानव को सही दिशा प्रदान कर सकती है। मानव ही इस विश्व परिवार की प्रथम इकाई है। जब एक-एक मानव बदलेगा तो विश्व का परिवर्तन स्वत: ही हो जायेगा। मैं विनम्रता-पूर्वक विनती के रूप में कहना चाहता हूँ कि हम में से प्रत्येक पाठक, सदस्य एवं शुभचिंतक यह संकल्प लें कि हम इस वर्ष अपने किसी संबंधी, मित्र, परिचित अथवा अन्य को साल भर यह पत्रिका मुफ्त में देंगे। इस शुभ कार्य में देने वाले एवं लेने वाले का भाग्य तो बनेगा ही, साथ ही साथ विश्व परिवर्तन के कार्य में सहयोग भी अवश्य ही जमा होगा। ❖

ज़िंदगी का सच

ब्रह्माकुमारी रुखमा, दापोरा, बुरहानपुर (म.प्र.)

किसी ने ठीक ही कहा है,

जो हिम्मत हारते हैं वो ज़िंदगी से हार जाते हैं।
जिनमें हौसला रहता है वो बाजी मार जाते हैं।।

जीवन में आने वाली चुनौतियों को अगर हम मन से स्वीकार कर लेते हैं तो हमारा हौसला बढ़ता जाता है। छोटी चुनौतियाँ स्वीकार कर लेने के बाद बड़ी चुनौतियाँ आने पर भी हम घबरायेंगे नहीं।

ज़िंदगी का पहला सूत्र है 'छोटों को देखकर जिओ'। देखिए, मंदिर में घण्टा भी होता है और घण्टी भी होती है। घण्टी छोटी और घण्टा बड़ा होता है। बड़ा घण्टा प्रभु से दूर ही रहता है जबकि छोटी-सी घण्टी भगवान के एकदम पास में ही होती है। जो अपने को छोटा समझकर जीता है, वो सबके दिलों के एकदम करीब होता है। हीरा छोटा होता है लेकिन बहुत कीमती होता है। ज्ञानी और योगी पुरुष कभी खुद की प्रशंसा नहीं करते, लोग उनकी प्रशंसा करते हैं।

ज़िंदगी का दूसरा सूत्र है 'निर्भय होकर बढ़ते चलो'। जीवन में कठिनाइयाँ तो आयेंगी मगर क्या उनसे लड़ना जरूरी है? रास्ते में पहाड़ है तो क्या ज़रूरी है कि हम कुदाली, फावड़ा लेकर टकरायें और उसे समतल करने में लग जायें? नहीं, यह उचित नहीं है। पहाड़ रास्ते में है और हमें आगे बढ़ना है तो समझदारी यही है कि उस पर चढ़कर पार हो जाएँ। वैसे ही अगर समुद्र रास्ते में है और पार जाना है तो क्या उसको खाली करना ही पुरुषार्थ है? नहीं, यह ना सिर्फ समय की बरबादी है बल्कि नासमझी भी है। सागर रास्ते में हो और पार जाना हो तो समझदारी यही है कि जहाज़ पर चढ़कर या नाव में बैठकर आगे बढ़ा जाए।

उतार-चढ़ाव तो जीवन में आते ही रहते हैं

कभी-कभी हम जीवन में बेमतलब उलझते रहते हैं, झगड़ते रहते हैं और अपने असली लक्ष्य से पीछे छूट जाते हैं। 'आ बैल मुझे मार' वाली जीवन शैली ठीक नहीं है। जिंदगी में उतार-चढ़ाव तो आते ही रहते हैं। सदा एक-से दिन कभी किसी के नहीं रहते। यादगार शास्त्र भागवत में प्रसंग आता है कि श्रीकृष्ण जैसे परम पावन देवता का जन्म हुआ तो कंस से बचाने के लिए उनको गुप्त रखा गया। अब देखिए, गरीब से गरीब इंसान के भी घर में पुत्र पैदा होता है तो वह अपनी खुशी का इज़हार करने के लिए थाली तो बजा ही देता है और अगर घर में थाली भी ना हो तो हाथ की ताली तो बजा ही देता है लेकिन श्रीकृष्ण के जन्म पर कोई थाली और ताली बजाने वाला भी नहीं था। पर जब बदलाव के क्षण आये तो उन्हीं श्रीकृष्ण ने कंस को मैदान में पछाड़ दिया। सूर्य को भी तीन स्थितियों से गुज़रना पड़ता है। वह सुबह कुछ और होता है, दोपहर में कुछ और होता है और शाम ढलते कुछ और ही होता है। सूर्य में ऊर्जा का अपार भण्डार होते हुए भी उसे कई उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं। जिंदगी का भी लगभग यही हाल है कि –

''जिंदगी जीना आसान नहीं होता,
बिना संघर्ष कोई महान नहीं होता,
जब तक ना पड़े हथौड़ी की चोट,
पत्थर भी भगवान नहीं होता।''

जिंदगी हमें बहुत कुछ सिखाती है, कभी हँसाती है तो कभी रुलाती है किंतु जो हर हाल में खुशहाल रहते हैं तो जिंदगी उनके आगे सर झुकाती है। यही है ज़िंदगी का सच!

दादी ने बढ़ाया हौसला

डॉ.एस.के.मोरे, होमियोपैथिक विशेषज्ञ, जालना

सन् 2001 की बात है, मेडिकल विंग की मीटिंग थी। काफी संख्या में होम्योपैथिक डॉक्टर मधुबन पहुँचे थे। एक दिन दादी प्रकाशमणि हम सभी डॉक्टरों से विशेष मिलने आयी और पूछा, मधुबन में किस-किस को अच्छी सुविधा नहीं मिली या कोई तकलीफ है तो हाथ खड़ा करो। हमारे में कुछ थे जिन्हों को थोड़ी असुविधा महसूस हो रही थी लेकिन दादीजी ने इतने प्यार से पूछा कि उन्हों की सारी मन की नाराज़गी दूर हो गई और कहने लगे, अरे, हमको तो घर में भी कोई इतना प्यार से नहीं पूछता, यहाँ तो दादी ने बड़े प्यार से पूछा है। उसके बाद उन लोगों का अहंकार टूट गया। आज भी वे ईश्वरीय ज्ञान से लाभ ले रहे हैं। इस प्रकार दादीजी के नि:स्वार्थ, सच्चे, दिल के प्यार ने कमाल कर दिया।

उसी मीटिंग में दादी ने कहा था, बाबा बिंदी हैं, बहुत मीठे हैं, बहुत सूक्ष्म हैं और ये होम्योपैथिक गोलियाँ भी बिंदी समान गोल हैं, बहुत मीठी हैं, छोटी हैं और जैसे बाबा सर्वशक्तिवान हैं ऐसे इन गोलियों में भी शरीर दुरुस्त करने की सूक्ष्म शक्ति भरी है। यह सुनकर सभी गद्‌गद् हो गये। इस प्रकार दादीजी ने हम होम्योपैथिक डॉक्टरों का हौसला बढ़ा दिया। वो दिन याद आता है तो खुशी से रोमांच खड़े हो जाते हैं। ❖

ओ प्रकाश स्तंभ

ब्रह्माकुमार गोपाल प्रसाद मुदगल, भरतपुर

ओ प्रकाश स्तंभ! तुझे मेरा प्रणाम।
ओ प्रकाश पुंज! तुझे मेरा प्रणाम।।

मुक्त हाथ से तू उजियाला बाँट रहा।
देकर दिव्य प्रकाश, अंधेरा छाँट रहा।।
शुभ संकल्पों का तू अमृत घोल रहा।
कौन कहे तू मौन? अरे! तू बोल रहा।।
ओ प्रकाश के बिन्दु! तुझे मेरा प्रणाम।
बना बिन्दु से सिन्धु! तुझे मेरा प्रणाम।।

मुझको लगता तू रूहानी महफिल है।
सच पूछो, पूरे भारत का तू दिल है।।
मन में आत्मिक-सात्विक भाव जगाता तू।
मन-पवित्रता, सर्वोपरि बतलाता तू।।
ओ प्रकाश के गीत! तुझे मेरा प्रणाम।
ओ प्रकाश संगीत! तुझे मेरा प्रणाम।।

तू निमित्त का भाव, हृदय में जगा रहा।
करना नव निर्माण, निरंतर सिखा रहा।।
तुझसे निर्मल वाणी, दुनिया सीख रही।
तुझमें युग की भोर सुनहरी दिख रही।।
ओ प्रकाश वरदान! तुझे मेरा प्रणाम।
तू है बाप समान, तुझे मेरा प्रणाम।।

तू रहकर चिर मौन, मौन ही सिखा रहा।
शांति, शक्ति देने सकाश, तू सिखा रहा।।
है संसार असार सीख तू सिखा रहा।
एक बाप ही सार, सार तू सिखा रहा।।
हे समाधि चिर मौन, तुझे मेरा प्रणाम।
मुखरित मन का मौन, तुझे मेरा प्रणाम।।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125

1.भुवनेश्वर- उड़ीसा के राज्यपाल महामहिम डॉ.एस.सी.जमीर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मृत्युंजय भाई। साथ में ब्र.कु.लीना बहन तथा अन्य। **2.रांची-** झारखंड के मुख्यमंत्री भ्राता रघुवर दास को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.निर्मला बहन। **3.बरेली-** अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय वस्त्र राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) भ्राता सन्तोष गंगवार, भाजपा नेता भ्राता गुलशन आनन्द, एडवोकेट भ्राता भारतभूषण तथा ब्र.कु.पार्वती बहन। **4.पालनपुर-** अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर अयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री हरीभाई चौधरी, ब्र.कु.भारती बहन, विधायक महेश भाई पटेल तथा जिलाधीश भ्राता दिलीप राणा। **5.सासाराम-** 'स्वस्थ एवं सुखी समाज' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए बिहार के स्वास्थ्य मंत्री भ्राता रामधनी सिंह, जेल अधीक्षक भ्राता अरोड़ा जी, जिला परिषद् अध्यक्षा बहन प्रमिला सिंह, ब्र.कु.संगीता बहन तथा ब्र.कु.बबीता बहन। **6.लुधियाना-** अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पंजाब विधानसभा अध्यक्ष भ्राता चरणजीत सिंह अटवाल, योजना आयोग अपाध्यक्ष प्रो.राजिन्द्र भण्डारी, मेयर भ्राता हरचरण सिंह गोहलवाड़िया, ब्र.कु.राजकुमारी बहन तथा ब्र.कु.सरस बहन। **7.पटना-** बिहार के सूचना तथा तकनीकी मंत्री भ्राता जयकुमार सिंह को ईश्वरीय संदेश देने के बाद ब्र.कु.अंजू बहन, ब्र.कु.सविता बहन, ब्र.कु.कंचन बहन तथा ब्र.कु.रविन्द्र भाई उनके साथ। **8.मुन्द्रा-कच्छ-** अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए गुजरात के कुटीर उद्योग मंत्री भ्राता ताराचंद छेड़ा, ब्र.कु.सुशीला बहन तथा अन्य।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2015-2017 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2015-2017. Published on 25th of each Month &
Posted on 1st to 6th of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : August, 2015.

रक्षा-बन्धन के पावन पर्व पर दादी जानकी जी का दिव्य सन्देश

ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों के कवच में सदा सुरक्षित रहने वाले सर्व भाई-बहनें, आप सबको रक्षाबंधन और जन्माष्टमी पर्व की कोटि-कोटि बधाइयाँ।

विश्वपिता परमात्मा के हम सभी बच्चे आपस में भाई-भाई हैं, सारा विश्व एक परिवार है, इस बेहद नाते की याद दिलाने वाला, एकता के सूत्र में पिरोने वाला तथा खुशी की खुराक से सदा स्वस्थ बनाने वाला यह प्यारा रक्षा-बन्धन पर्व हम सबके लिए अमूल्य ईश्वरीय उपहार है।

परमात्मा पिता की अमूल्य शिक्षाओं को जीवन में धारण करते हुए हम मन, वचन, कर्म तथा स्वप्नों को भी सम्पूर्ण पवित्र बनाएँ, यही इस पर्व का पावन सन्देश है।

दिल की शुभकामना है कि समय, श्वास, संकल्प सब ईश्वरीय सेवा में सफल करते हुए, चिन्तन को शुद्ध तथा श्रेष्ठ बनाकर, विश्व की सर्व आत्माओं को सुख-शान्ति की अंचलि प्रदान करने के दृढ़ संकल्प के साथ इस रक्षा-सूत्र को कलाई पर बाँधें। मधुर बोल की अविनाशी मिठाई एक-दो को खिलाएँ और आत्मस्थिति में टिकने का टीका लगाएँ। इसी धारणा से सम्पन्न और सम्पूर्ण देव समान बन जाएंगे।